"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371
by VIKRAM SINGH

Page :
Date :

⊛ पुनर्जागरण ⊛ (रेनेसा) (Renaissance - लैटिन शब्द)

- इसका अर्थ है पुनर्जन्म (Rebirth)
- ⇒ इसका काल तेरहवीं से सोलहवीं सदी (1250-1550) के बीच का माना जा सकता है

⇒ **कारण / आधार:-** यूरोप मध्यकाल से आधुनिक काल में बदल रहा था जबकि इसी दौरान 11वीं - 13वीं सदी के बीच ईसाईयों एवं मुस्लिमों के बीच युद्ध हुए जिसके फलस्वरूप यूरोप का बाह्य संपर्क हुआ और ज्ञान एवं सूचनाओं तक उनकी पहुँच बनी।

यूरोप में सामंतवाद का पतन होते ही नये राज्यों का उदय हुआ एवं कई वैज्ञानिक अविष्कार हुए।

व्यापारिक कार्यकलापों में वृद्धि से भी सांस्कृतिक गतिविधियाँ बढ़ती गई जिसके कारण अन्य देशों से संपर्क बढ़ा। समृद्ध व्यापार के कारण नगरों का विकास हुआ जैसे:- वेनिस, मिलान आदि। अमीर व्यापारियों ने विद्वानों एवं कलाकारों को आश्रय दिया एवं पुस्तकालयों की स्थापना की गई। विभिन्न नये उत्पादनों एवं प्रयोगों की कोशिशें तेज हो गई।

कागज एवं मुद्रण (प्रिंटिंग प्रेस) के प्रसार ने शिक्षा को व्यापक बनाया एवं सामान्य लोगों तक इसकी पहुँच आसान हो गई। बाइबिल का अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ जिसके कारण लोग चर्च के धार्मिक अंधकार से बाहर आकर वास्तविक बातों को जान पाए।

1453 ई. में, कुस्तुंतुनिया जो बैजेन्टाइन साम्राज्य (पूर्वी रोम) की राजधानी था, ऑटोमान तुर्कों द्वारा कब्जे में कर लिया गया अतः यहाँ के विचारक, विद्वान, कलाकार आदि पश्चिमी रोम (ग्रीक, इटली) की ओर गये जिनमें से अधिकांश इटली के फ्लोरेंस नगर में बस गये अतः पुनर्जागरण की शुरुआत इटली के पास वाले क्षेत्रों से हुई।

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371
www.educationvsr.blogspot.in

इसके अलावा कुबलाई खां के अधीन विशाल मंगोल साम्राज्य का उदय हुआ जो रूस, चीन, पोलैण्ड, हंगरी तक विस्तृत था जिसके कारण यूरोप का पूर्वी देशों से सीधा संपर्क हुआ और कागज मुद्रण एवं बारूद की जानकारी मिली।

इस प्रकार के आदान प्रदान से यूरोपवासियों में प्रतिक्रियास्वरूप अपनी सभ्यता की श्रेष्ठता का भाव जागा एवं फलस्वरूप आधुनिक युग की नींव पड़ी।

⇒ **इटली में पुनर्जागरण के कारण :-**

इटली प्राचीन रोमन सभ्यता का जन्मस्थल था जहाँ लैटिन भाषा का भी जन्म हुआ था एवं लैटिन का प्रभाव क्षेत्र इटली में काफी व्यापक था अतः प्राचीन रोमन साम्राज्य जैसे शक्तिशाली देश बनाने का विचार हर जगह व्याप्त था। यही कारण था कि रोमन संस्कृति पुनर्जागरण की प्रेरणा का केंद्र बनी।

इसके अलावा फ्लोरेंस के व्यापारी काफी अमीर थे एवं अन्य नगर काफी समृद्ध थे जो सांस्कृतिक कार्यकलापों को आश्रय देते थे।

इटली मे सामंतवाद अन्य यूरोपीय देशों की अपेक्षा कम तीव्र था। जहाँ 'नागरिक राज्य' पहले ही स्थापित हो गया था अतः लोगों को स्वतंत्रतापूर्ण माहौल मिला जो ज्ञान के प्रसार के लिए सहायक सिद्ध हुआ।

इसके साथ ही पूंजीवादी उद्यमों एवं संगठनों की स्थापना ने सशक्त बुर्जुआ जीवन मूल्यों की स्थापना कर दी। इससे लोगों में एक नई चेतना को अभिव्यक्ति मिली।

⇒ **प्रसार क्षेत्र :-** इसका प्रसार संपूर्ण इटली में एक साथ नहीं हुआ। इटली के बाहर इसमें ईसाई धर्म की मान्यताएँ भी शामिल हुई अतः इसका प्रसार जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैण्ड आदि में धीरे-2 पहुंचा हालांकि 16वीं सदी तक यहाँ भी अपने चरम पर पहुँचा।

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Ex:- अरस्तु का 'तर्कशास्त्र'

⇒ पुनर्जागरण के तत्व/विचार:-

(1) धर्म आधारित चिंतन की जगह 'तर्क आधारित चिंतन' शुरु

(2) धार्मिक वाद-विवाद एवं अंधविश्वास की जगह 'प्रयोग' का महत्व
Ex:- रोजर बेकन (1214-94) की रचना 'ओपस मेयस' में प्रयोग विधि को रेखांकित किया
Ex:- गैलीलियो ने, कॉपरनिकस की परिकल्पना को 'प्रयोग' से पुष्ट कर दिया

(3) मानववाद का विकास, जिसमें अंधविश्वासों की जगह, मानव को केन्द्र में रखकर अध्ययन किए गये।
Ex:- पैट्रार्क → अग्रणी मानववादी था
इरैस्मस ⇒ "मानववादियों का राजा"

(4) मानववाद एवं पुनर्जागरण की एक विशेष भावना "धर्मनिरपेक्षता" है जिसमें धर्म को व्यक्तिगत मानकर इसे समाज एवं राज्य से अलग करने की भावना आई।

(5) ऐतहासिक आत्मचेतना

(6) 'व्यक्तिवाद' जैसी एकल अवधारणा

⇒ पुनर्जागरण के समाज पर प्रभाव:-

(1) तर्क एवं विवेक को सर्वोच्चता ना कि धर्म को।
(2) प्राचीन ज्ञान को 'प्रयोग' कर नवीनता में प्रतिष्ठित किया
(3) चर्च एवं राज्य के बीच पृथकता को वास्तविकता प्रदान की
(4) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास
(5) मनुष्य के भौतिक एवं लौकिक जीवन को प्रधानता दी
(6) शिक्षा एवं साहित्य को आम लोगों के अनुकूल बनाया
(7) आम लोगों की अभिव्यक्ति को प्रतिष्ठा देकर, व्यक्तिगत पहचान की भावना जगाई जिससे राष्ट्रीयता की भावना विकसित हुई
(8) सामंती प्रणाली का अंत हुआ जिससे मध्यम वर्ग एवं औद्योगिक वर्ग का उदय संभव हो पाया

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371
www.educationvsr.blogspot.in

Page:
Date:

⇒ आर्थिक क्षेत्र में प्रभाव:-

(1) पूंजीवादी व्यवस्था का सूत्रपात
(2) आर्थिक विषमता का प्रसार
(3) उपनिवेशवाद एवं आर्थिक अधीनता की शुरूआत
(4) आर्थिक गतिविधियों में राज्य का हस्तक्षेप का प्रारंभ
(5) श्रम का मुद्रा में मूल्य निर्धारण एवं श्रम की खरीद

⇒ धार्मिक क्षेत्र में प्रभाव:- (1) धर्म का व्यक्तिगत आस्था तक सीमित हो जाना
(2) धर्म सुधार आंदोलनों का प्रादुर्भाव
(3) चर्च की राज्य से अधीनता

⇒ सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रभाव:-
(1) शिक्षा प्रणाली में अमूल्य बदलाव
(2) वैज्ञानिक मनोवृत्ति से नई सोच का उदय
(3) यथार्थवादियों का उदय
(4) राष्ट्रीय भाषाओं का विकास एवं उनके महत्व में वृद्धि
(5) कला की सभी विधाओं का सीमाविहीन विकास
(6) साहित्यिक मानवतावाद का विकास

⇒ राजनैतिक क्षेत्र पर प्रभाव:-
(1) सामंती व्यवस्था का पतन
(2) धर्मनिरपेक्ष राज्य की अवधारणा का उदय
(3) राज्य की शक्तियों का पृथक्करण

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371
www.educationvsr.blogspot.in

⇒ साहित्य पर प्रभाव :-

✦ इटली के साहित्यकार :- दांते, पेट्रार्क, बुकासियो

⇒ दांते :- अपनी कविताओं के लिए मशहूर थे (इतालवी कविता का पिता)
↳ कृति :- 'डिवाइन कॉमेडी' है जिसमें काल्पनिक दुनिया का वर्णन है परन्तु जिसमें मानवप्रेम, देशप्रेम एवं प्रकृति प्रेम विद्यमान है
↳ अन्य कृतियाँ :- मोनार्किया (राजनीतिक साहित्य) जिसमें अधार्मिक विषयों में राज्य की सर्वोच्चता बताई है।
↳ वीतानोआ :- एक महिला की प्रशंसा

⇒ पेट्रार्क :- (मानवतावाद का पिता) जिसने प्राचीन लेखकों के साथ काल्पनिक पत्राचार किया है जो साहित्य के रूप में मौजूद है

⇒ बुकासियो :- (इतालवी गद्य का जनक) (पेट्रार्क का शिष्य)
↳ कृति ⇒ 'डेकेमेरोन' जिसमें 100 कहानियों का संग्रह है
↳ तत्कालीन जीवन का वर्णन जिसमें ब्लैक डेथ का विवरण शामिल है।

✦ अंग्रेजी साहित्यकार :-

⇒ जाफरे चौसर (1340-1400) :- (अंग्रेजी कविता का पिता)
↳ महान कृति :- 'कैण्टरबरी टेल्स',

⇒ टॉमस मूर :- कृति ⇒ 'यूटोपिया' जिसमें मानवतावादी विचार हैं

⇒ शेक्सपियर (1564-1616) :- सबसे महान ब्रिटिश साहित्यकार
कथन ↳ "मनुष्य में सभी गुण एवं दोष हैं और वह इसके साथ ही महानता की सीढ़िया चढ़ता है या पतन में जाता है।"

Scanned by CamScanner

Page :
Date : / /

❖ फ्रांसीसी साहित्यकार :-

⇒ **रेबेलॉस** :- धार्मिक कट्टरता एवं पुराणपंथिता का निषेध
↳ **मूलमंत्र** :- 'प्यास' ⇒ बौद्धिक प्यास, नैतिक प्यास
↳ अनुभव की प्यास, यथार्थ की प्यास

⇒ **मान्तेन** :- (प्रथम आधुनिक व्यक्ति की उपाधि)
↳ साहित्य की नई शैली दी जिसे 'निबंध' कहा जाता है
↳ **मूलमंत्र** :- संसार की महानतम बात है कि मनुष्य इस बात को जान ले कि वह अपनी वास्तविकता के अनुरूप कैसे बने।

❖ अन्य चर्चित साहित्यकार :-

⇒ **इरैस्मस** :- (हालैण्ड निवासी) (मानवतावाद का जीवंत प्रतिनिधि)
↳ **कृति** ⇒ 'इन द प्रेज ऑफ फॉली' ⇒ व्यंग्य रचना (चर्च पर प्रहार)
↳ संसार की पहली Best selling BOOK

⇒ **सर्वेण्टीज** :- (स्पेन निवासी)
↳ **कृति** :- 'डॉन क्विजोट' ⇒ सामंती जीवन पर व्यंग्य

❖ राजनीतिक साहित्य :- दांते की 'मोनार्किया'

⇒ **मार्सिग्लयो** :- (फ्रांस)
↳ **कृति** :- 'Defender of Peace' ⇒ पोप का राजनैतिक हस्तक्षेप अनुचित बताया

⇒ **मैकियावेली** :- (फ्लोरेंस निवासी) (सबसे बड़ा राजनैतिक चिंतक)
↳ धर्मनिरपेक्षता को अनिवार्य बताया
↳ **कृति** :- 'हिस्ट्री ऑफ फ्लोरेंस' :- 8 भागों में विभाजित
↳ महत्वपूर्ण भाग → 'द प्रिंस'

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date :

✦ कला पर प्रभाव ✦ (चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्यकला व संगीत)

⇒ **पियरो** :- (इटली) चित्र कला का पिता माना जाता है (14वीं सदी)
↳ पहली बार मानव व प्रकृति पर अनेक चित्र बनाए।

⇒ **'लियोनार्दो द विंची'** :- (फ्लोरेंस निवासी) (पुनर्जागरण का मानव)
↳ बहुमुखी प्रतिभा → वैज्ञानिक, गणितज्ञ, संगीतकार, दार्शनिक, इंजीनियर, चित्रकार
↳ शरीर विज्ञान का गहरा अध्ययन कर चित्र बनाए
↳ **'मोनालीसा'** :- चेहरे पर भावों (दुख-खुशी) का एकसाथ चित्रण
'द लास्ट सपर' :- समाज में व्याप्त असमानता पर कुठाराघात

⇒ **माइकल एंजेलो** :- (फ्लोरेंस निवासी) (महान चित्रकार)
↳ **'द लास्ट जजमेंट'** :- 5 वर्षों में पूरा किया जिसमें रोम के सिस्टाइन गिरिजाघर (वेटिकन सिटी) की भीतरी छत पर बाइबिल से संबंधित दृश्यों का चित्रण किया है (Biblian Hero)
↳ **डेविड** :- आदर्श पुरुष के शरीर का चित्रण (मूर्ति) (1501)

⇒ **Giotto** :- Father of modern Painting (फ्लोरेंस निवासी)
↳ Mineral colours का use
↳ मानव एवं प्रकृति के संबंध को दर्शाया

⇒ **रफेल** :- (रोम-इटली) यह एंजेलो एवं लियानार्दो से प्रभावित था
↳ अध्यात्म एवं धर्म का मिश्रण है। (चित्रकला में)
↳ **चर्चित पेंटिंग** :- जीसस की मां मेडोना

(हालांकि मेडोना का चित्र पहले इटली के अन्य चित्रकार फ्रांसिस्को ने भी बनाया था जो एक बार में ही चित्र बनाने में मशहूर थे)

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

- स्थापत्यकला :- सबसे महान स्थापत्यकार माइकल एन्जेलो था।
  - 'ब्रुनेलेस्की' (फ्लोरेंस) ने नुकीले मेहराबों की जगह गोल मेहराबों का विकास कर नई शैली को जन्म दिया
  - इस काल में पूर्व प्रचलित 'गोथिक शैली' को छोड़ दिया गया।
  - रफेल एवं एंजेलो ने मिलकर मशहूर गिरजाघर सेण्ट पीटर का निर्माण किया।

⊛ विज्ञान पर प्रभाव ⊛

⇒ **फ्रांसिस बेकन** :- आधुनिक विज्ञान का पिता।
- वैज्ञानिक प्रणाली की वकालत एवं प्रयोग को तर्कसिद्धि का आधार बताया

⇒ **कॉपरनिकस** :- (1473-1543) (पोलैण्ड)
- हेलियोसेंट्रिक परिकल्पना दी जिसने टॉलेमी (चर्च से प्रेरित) की जियोसेंट्रिक अवधारणा का खण्डन किया। जिसको प्रचारित करने के प्रयास में 'ब्रूनो' को जिंदा जला दिया गया।

अंततः कापरनिकस की परिकल्पना को, केपलर ने गणितीय नियम बनाकर पुष्ट कर दिया।
इसी क्रम में ~~गैलीलियो~~ गैलीलियो ने दूरबीन बनाकर अन्य तारों एवं ग्रहों को प्रत्यक्ष आंखों से देखा एवं उपर्युक्त परिकल्पना को प्रमाणित कर दिया।

⇒ **न्यूटन** :- (1642-1727) [Book :- Principia mathematica]
- गुरूत्वाकर्षण के सिद्धांत का प्रतिपादन किया जिसके फलस्वरूप यह प्रमाणित हो सका कि विश्व, किसी आकस्मिक घटना या अदृश्य शक्ति की कृति न होकर, सुव्यवस्थित प्राकृतिक नियमों से संचालित हो रहा है।

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date :

⇒ विलियम हार्वे :- रक्त परिसंचरण प्रणाली की खोज की (1628)
(इंग्लैण्ड)

⇒ जॉन गुटेनबर्ग :- छपाई कला का अविष्कार किया (1477)
(जर्मनी)
↳ पहली बार बाइबिल (न्यू टेस्टामेंट) छापी गई

✱ भौगोलिक खोजें :-

विज्ञान के विकास के फलस्वरूप, नये उपकरणों (दिक्सूचक एवं समुद्री जहाज) से नये समुद्री मार्ग खोजे गये (15-16वीं सदी)

इसका कारण तुर्की पर तुर्कों (मुस्लिमों) के अधिकार के पश्चात् यूरोपीय व्यापारियों को एशिया में व्यापार करने के लिए, नये मार्गों की खोज के लिए मजबूर किया।

इसी के फलस्वरूप डियाज (पुर्तगाल), कोलंबस (स्पेन) एवं मैगलन (स्पेन) ने कई क्षेत्रों की खोज की

∘ पुर्तगाल :- के शासक 'हेनरी' (द नेवीगेटर) ने समुद्री मार्ग खोजने के प्रयास किए एवं अफ्रीका के पश्चिमी तट को खोजा परन्तु दुर्भाग्यवश 1460 में मृत्यु हुई।

1487 में इन्हीं खोजों से प्रभावित होकर 'बारथेलो डियाज', ने अफ्रीका के दक्षिणतम बिंदु तक पहुँचा परन्तु यहाँ तूफानों के प्रकोप के चलते इसने इसे 'The cape of Storm' का नाम दिया जबकि तूफान शांत होने पर इसे 'The cape of good hope' का नाम दिया।

↳ 1498 में इसी रास्ते से 'वास्कोडिगामा', कालीकट तट पर पहुँचा

∘ कोलंबस :- वास्कोडिगामा से प्रेरित होकर पूर्वी देशों की खोज
(स्पेन) के लिए पश्चिम की ओर अग्रसर हुआ

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

कोलंबस जब बहामोस द्वीप पहुंचा जिसे इसने 'West Indies' का नाम दिया।
अगली दो कोशिशों में कैरेबियन आइलैंड एवं Central America को खोजा।
1501 में 'वेस्पुकी' ने प्रमाणित किया कि कोलंबस ने भारत की नहीं बल्कि नये विश्व की खोज की है जिसे 'अमेरिका' नाम दिया गया
[नया विश्व means 'America']

㊍ **Papal Bull** ㊍ (एक प्रकार की सीमारेखा) (पॉप का लिखित आदेश पत्र)

↳ 1493 के बीच स्पेन एवं पुर्तगाल के बीच विवाद बढ़ा तब पॉप एलेक्जेंडर -VI ने समझौता करवाया एवं आभासी सीमारेखा Papal Bull का निर्धारण किया जिसमें पश्चिम में स्पेन को एवं पूर्व में पुर्तगाल को जाने का अधिकार दिया गया

⇒ **मैगलन (मैगालिन)** :- (स्पेन) • पश्चिम की ओर पांच जहाजों को लेकर 1519 में, दक्षिण अमेरिका के दक्षिण में मैगालिन जलसंधि की खोज की उसके आगे ऐसे समुद्र में फंस गया जो काफी शांत था अंत: नाम प्रशांत महासागर दिया गया
अंततः 1521 में फिलीपींस के तट पर पहुंचा जहां के मूल निवासियों ने उसकी हत्या कर दी।
अंततः 4 जहाज नष्ट हो गये एवं 5 वां विक्टोरिया जहाज ही वापस लौट सका।
→ प्रथम व्यक्ति जिसने विश्व की खोज की

www.educationvsr.blogspot.in

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

→ (Age of Enlightment)

✱ प्रबोधन (Exhortation) ✱

Page : ____
Date : __/__/__

⇒ 17 वीं सदी के वैज्ञानिक अन्वेषणों से, लोगों में चिंतन का नया आधार तैयार हुआ, जिसे प्रबोधन कहा गया।

प्रबोधन → जानवान होना, प्रकाशवान होना।

→ **विचारधारा का जनक** :- डेकार्ट, हॉब्स (आधुनिक तर्कवाद को व्यापक बनाया)

→ **व्यवहारिक जनक** :- न्यूटन एवं लॉक (विचारों का आधार तैयार किया)

→ **शुरुआत** :- 'वाल्तेयर' की ब्रिटेन यात्रा

✓ प्रबोधन चिंतन का आधार / तत्व :-

→ प्रकृति के नियम सुनिश्चत है जिसमें दैवीय हस्तक्षेप जैसी कोई बात नहीं है

→ तर्क एवं विवेक से परिचालित मनुष्य का भविष्य उज्ज्वल है

→ 'जीवन के आनंद' पक्ष पर जोर देकर 'मोक्ष प्राप्ति' के रास्तों को अस्वीकार कर दिया

✓ प्रबोधन के महान विचारक :-

~~मोंटे~~ मांतेस्क्यू, वाल्तेयर, कांट रूसो, एडम स्मिथ आदि।

✓ पुनर्जागरण से भिन्नता :-

पुनर्जागरण के विचारकों ने अतीत पर आधारित ज्ञान को विश्वसनीय माना जबकि प्रबोधन के विचारक अतीत की सत्ता को अस्वीकार करते थे।

✓ प्रभाव क्षेत्र :-

मुख्यत: फ्रांस एवं ब्रिटेन के आसपास का क्षेत्र ना कि पूरा यूरोप। हालांकि रूस की साम्राज्ञी 'कैथरीन', प्रशा का सम्राट 'फ्रेडरिक द्वितीय' एवं आस्ट्रिया का सम्राट जोसेफ-द्वितीय इससे पूर्णत: प्रभावित थे।

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

* प्रबोधन – आस्तिक या नास्तिक ?

इसके चिंतक नास्तिक नहीं थे अर्थात् सृष्टि का निर्माण ईश्वर ने किया है परन्तु अब उनका कोई हस्तक्षेप नहीं है। यह अपने ही नियमों से चालित है।
इसका प्रसार अधिकतर कुलीन वर्ग, समृद्ध व्यापारी या उच्च पादरी लोगों के बीच फैला। निम्न वर्ग निरक्षर होने के कारण इससे प्रभावहीन रहा।

* प्रबोधन का प्रभाव :-

→ अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम को वैचारिक आधार प्रदान किया एवं उसके संविधान पर इसका प्रभाव है
→ फ्रांस की क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार की
→ 19 वीं सदी में यूरोप से 'दास प्रथा' का अंत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(*) प्रबोधन के प्रमुख विचारक (*)

* मांतेस्क्यू – (पहला राजनीतिक वैज्ञानिक)

→ Book ⇒ Spirit of Laws (विधि का सार), जिसमें शक्ति के पृथक्करण का विचार दिया है अर्थात् मानव के अधिकार तभी सुरक्षित रह सकते है जब सरकार की शक्ति का स्पष्ट पृथक्करण हो –
→ कार्यपालिका, विधानपालिका एवं न्यायपालिका में
∠ "I am the State" की निरंकुशता का खण्डन किया

Scanned by CamScanner

(पेरिस)

✤ **वाल्तेयर** :- (पहला आधुनिक इतिहासकार)

- इसको प्रबोधन के चिंतन का प्रतिनिधि वैसे ही माना जा सकता है जैसे दो सदी पूर्व 'इरस्मस' को मानवतावाद का जीवंत प्रतिनिधि माना।
- ब्रिटेन यात्रा के दौरान, फ्रांस - ब्रिटेन समाज के अंतर को रेखांकित किया एवं राजतंत्र की निरंकुशता, चर्च की व्यापकता व अंधविश्वास पर प्रहार किया। एवं चर्च को 'शैतानी हकीकत' कहा।
- कृतियाँ :- ऑडीपस, The Age of Louis XIV (1751)

✤ **काण्ट** :- (जर्मन दार्शनिक) (जर्मनी)

- अंतर्राष्ट्रीय युद्धों का विरोध एवं पहली बार "विश्वराज्य की परिकल्पना"
- विवेक शक्ति की भौतिक शक्ति पर प्राथमिकता दी
- जर्मनी में सामंतवाद के अंत में प्रमुख योगदान (विचारों का)
  जर्मनी में राष्ट्रीय एकीकरण/एकता की भावना का उदय
- रचनाएँ :- 'जजमेंट', 'इटरनल पीस', प्रेक्टिकल रीजन

(जिनेवा)

✤ **रूसो** :- फ्रांसीसी क्रांति का पिता

- राज्य के दैवीय अधिकार का खण्डन एवं जनतंत्र को राज्य का आदर्श स्वरूप माना।
- आर्थिक विषमता का विरोध
- "स्वतंत्रता, समानता, एवं भ्रातृत्व" का नारा
- रचनाएँ :- 'डिसकोर्सेज ऑन साइंस एण्ड आर्ट', सोशल कान्ट्रेक्ट
- 'Man is Born Free but everywhere he is in chain
- नेपोलियन के अनुसार, " अगर रूसो का जन्म न होता, तो फ्रांसीसी क्रांति भी न होती।"

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date :

एडम स्मिथ (Father of Advance Economy)

→ प्रबोधन काल के प्रमुख आर्थिक चिंतक

→ कृति : 'वेल्थ ऑफ नेशन' ⇒ जैसे प्रकृति के नियम सुनिश्चत है वैसे ही अर्थव्यवस्था मांग एवं पूर्ति से परिचालित होती है।

→ 'लाइजेज फेयर' का concept दिया
जिसमें 'मुक्त अर्थव्यवस्था' का समर्थन किया

www.educationvsr.blogspot.in

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

→ जिसका प्रारंभ एक कुलीन वर्ग ने किया जबकि अंत एक सैनिक तानाशाह ने।

✻ फ्रांसीसी क्रांति ✻ (1789–1815)

इस क्रांति ने यूरोप के साथ विश्व के अन्य देशों के लिए लोकतंत्र स्थापित करने में मार्गदर्शक की भूमिका निभाई

◆ क्रांति के कारण ◆

(1) **राजनीतिक कारण** :- फ्रांस पर 'बूर्बो राजवंश' का शासन था जो अपने को दैवीय शक्तियों से परिपूर्ण मानते थे जो अपने कर्मों के लिए जनता से ज्यादा केवल ईश्वर के प्रति ~~स्व~~ जवाबदेह मानते थे।

राजनैतिक अवस्था निरंकुशतापूर्ण थी एवं राजा का राज्य की समस्त शक्तियों पर अधिकार था हालांकि लुई चौदहवां के शासनकाल में उसकी योग्यता के कारण स्वीकार किया गया (1661–1715) परन्तु उसके बाद के उत्तराधिकारी (लुई-15वां, लुई-16वां) पूर्णतः अयोग्य निकले। लुई-16वां के समय, राज्य के शासन पर उसकी पत्नी एन्त्वायनेत का पूर्ण दखल था जिसको जनता के हितों से कोई खास लगाव नहीं था।

(2) **सामाजिक कारण** :- फ्रांस का समाज तीन भागों में बंटा था-

(i) पादरी (Clergy) (ii) सामंत/अभिजात वर्ग (Noble) (iii) Common man (आमजन)

(i) पादरी वर्ग के पास असीमित अधिकार थे जो चर्च के संरक्षक के रूप में लोगों से 'टाइथ' नामक धार्मिक कर वसूलते थे एवं विशेषाधिकारों के चलते कई बुराईयां एवं भ्रष्टाचार से लिप्त थे

(ii) सामंत वर्ग पर कोई कर नहीं था एवं सारी राजकीय नियुक्तियां इसी वर्ग से होती थी हालांकि उनके अधिकार सीमित थे। ये लोग भूमि मालिक भी थे जो अक्सर नगरों/राजधानी क्षेत्र में रहने लगे जिससे लोगों से इनकी दूरी बढ़ती गई

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

'The Nobles Fight, The clergy Pray and Common Pay' की कहावत

(iii) सबसे ज्यादा शोषित वर्ग आम लोगों का था जबकि इनकी जनसंख्या सबसे ज्यादा थी। इनको कई तरह के कर देने पड़ते थे-
टैली → भूमिकर
टाइथ → धार्मिक कर
गैबेल्ल → नमक कर
} इन सबके अलावा अगर कोई किसान खेत बेचता था तब 1/5 भाग भी कर में देना होता था

इस श्रेणी में मुख्यत: किसान एवं 'बुर्जुआ' वर्ग (व्यापारी) आता था
लुई-14वें के बाद इस वर्ग का शोषण अपने चरम पर पहुँच गया

(3) **आर्थिक कारण**:- लुई-16वें के समय हालात तेजी से बिगड़ने लगे क्योंकि जनसंख्या तेजी से बढ़ रही थी जबकि उत्पादन स्थिर था जिससे महंगाई भी बढ़ी। इसके अतिरिक्त
1771-72 ⇒ अकाल ने अनाजमूल्य मे बेतहाशा वृद्धि की
1775 ⇒ चारे की कमी से मवेशियों की मृत्यु हुई जिसमें 1/3 जनता प्रभावित हुई
1787 ⇒ खराब पैदावार से स्थिति डांवाडोल
1786 ⇒ फ्रांसीसी-ब्रिटिश संधि द्वारा घरेलू उद्योगों पर नकरात्मक फर्क पड़ा एवं औद्योगिक उत्पादन 50% तक कम हो गया।

उपर्युक्त कारकों से कृषकों एवं मजदूरों में तेजी से बेरोजगारी बढ़ी।

इसके अलावा राजकोष भी घाटे में गया जिसको सुधारने के असफल प्रयास हुए। अर्थमंत्री बनाया गया पहले तुर्जो, फिर 'नेकर' अंततः कालोन। परन्तु अंततः हालात बेकाबू होते चले गए।

(4) **फ्रांस के विचारक**:- उस दौरान तिकड़ी मांटेस्क्यू, वाल्तेयर व रूसो के स्तर का रचनाकार/विचारक पूरे यूरोप में कहीं नहीं था। अतः पेरिस इस

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

क्रांति का केंद्र बनकर उभरा। इनके कारण बौद्धिक वातावरण उभरा और आलोचनात्मक मूल्यांकन किया जाने लगा।

मांतेस्क्यू ⇒ The Seperation of Power का सिद्धांत

वाल्तेयर ⇒ राजतंत्र की निरंकुशता एवं चर्च पर प्रहार किया - चर्च को शैतानी हकीकत कहा।

रूसो ⇒ 'Social Contract' लिखी एवं स्वतंत्रता, समानता एवं भाईचारे का नारा दिया

इसके अलावा 'दिदरो' द्वारा संपादित = 'एन साइक्लोपीडिया' थी जिसने समाज एवं संस्थानों पर तीखी आलोचना की।

'क्वेसने' जो व्यापारी अर्थशास्त्री था वह उदीयमान 'बुर्जुआ वर्ग' पर कर लगाने एवं उन्मुक्त व्यापार का समर्थक था।

क्रांति के चरण :- विद्वान लेफाब्रे के विभाजन के आधार पर चार भागों में बांटा जा सकता है -

(i) 1789 - 1792 ⇒ संवैधानिक राजतंत्रीय चरण
(ii) 1792 - 1794 ⇒ उग्र प्रजातांत्रिक गणतंत्रवाद का चरण
(iii) 1794 - 1799 ⇒ उदारवादी गणतंत्रवादी का चरण
(iv) 1799 - 1814 ⇒ प्रजातंत्र की आड़ में तानाशाही एवं साम्राज्यवादी चरण

पहला चरण :- आर्थिक गतिरोध उत्पन्न होने पर, राजा ने तीनों वर्गों के लोगों की एक संयुक्त बैठक 1789 में आयोजित करने का निर्णय लिया। मतदान स्वरूप में विवाद उत्पन्न होने पर तृतीय स्टेट्स के लोगों ने विरोध किया

'नेशनल असेम्बली' (NA) :- तृतीय स्टेट्स लोगों ने इसका रूप धारण कर लिया एवं संविधान बनाने की जिद की
↳ नेतृत्व आब्बे सिए (पादरी), मिराबो (प्रखर राजनेता) ने किया।

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

⇒ **Oath of Tennis court** :- तृतीय स्टेटस के लोगों ने राजा का वहिष्कार कर टेनिस कोर्ट में अपनी सभा लगाई जिसका उद्देश्य लोकतांत्रिक गणराज्य का गठन करना था

⇒ **वास्तील का किला** :- यहाँ राजनैतिक कैदी रखे जाते थे
13 July को पेरिस सेना भेजने की अफवाह में लोगों ने इस किले को 14 July को ध्वस्त कर दिया।
↳ इसका पतन 'संसार में स्वतंत्रता के नववर्ष' का परिचायक माना गया

⇒ **पेरिस कम्यून** :- जनता ने पुरानी राज व्यवस्था खत्म करके नई म्यूनिसिपल सरकार बना ली जिसे 'कम्यून' कहा गया

(*) 14 July → फ्रांस का राष्ट्रीय दिवस

(1791) ⇒ फ्रांस में प्रथम संविधान का निर्माण हुआ
↳ प्रमुख तत्व :- (i) राज्य की सार्वभौमसत्ता जनता में निहित है
(ii) शक्ति की विकेंद्रीकरण
↳ राजा के अधिकार सीमित कर दिए गए एवं वैधानिक राजतंत्र का निर्माण हुआ। जिसमें कानून बनाने में राजा को शक्तिहीन रखा गया।

मतदाता → निष्क्रिय
→ सक्रिय :- 25 वर्ष (या अधिक) आयु की के लोग जो कर, 3 दिन की आय के बराबर देते हों

इससे समानता के अधिकार की पूर्ण अवहेलना हुई एवं फ्रांस की 2/3 जनता मतदान के अधिकार से वंचित रह गई।

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date :

न्यायपालिका के न्यायाधीश भी केवल सक्रिय नागरिक चुनते थे।
अंततः स्थनीय से लेकर केंद्रीय व्यवस्था, बुर्जुआ वर्ग के प्रभाव क्षेत्र में आ गई।

=> (एसाइनेट) => बाण्ड पत्र, जो NA ने चर्च की संपत्ति जब्त करके, बेचने हेतु जारी किए।

(सिविल कान्सटि...)
NA (राष्ट्रीय सभा) ने धार्मिक स्वतंत्रता की घोषणा कर दी एवं चर्च का नया संविधान बनाया। जिसमें पादरी एवं बिशप सीधे जनता द्वारा चुने जाते थे एवं अब ये पोप के अधीन नहीं थे। एवं पादरियों का वेतन राज्य से देने का प्रावधान किया गया।

परन्तु श्रमिकों के लिए कोई कल्याणार्थ कार्य नहीं किया गया।

(National कन्वेंशन) => संविधान गठन के लिए नया दल गठित हुआ।

⊕ **दूसरा चरण** :- NC (1792 में 3rd चरण Start)
→ पहला (राजपक्षधरों का समूह) (युद्ध का पक्षधर)
→ दूसरा समूह = 'रेडिकल'

जिरोंदिस्त (जिरोंद प्रांत के नाम पर) ⇓ विकेंद्रीकरण के समर्थक

जैकोबियन्स (जैकब चर्च में मिलते थे) ⇓ पेरिस कम्यून पर कब्जा } दोनों के मध्य विवाद शुरू

(1793) → लुई को मृत्युदंड
→ जैकोबियन समर्थकों ने, जिरोंदिस्त नेताओं को विधानमंडल से खींचकर मार डाला।
→ सत्ता जैकोबियन्स के हाथ में, दांते प्रमुख नेता बना
→ अस्थायी सरकार में, जनसुरक्षा एवं सामान्य सुरक्षा समिति बनायी गई जिसके तहत एक मजबूत सेना का गठन किया गया

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date : / /

→ 'आतंक का राज'

रोबेस्पियर → जनसुरक्षा समिति का प्रमुख बनाया गया
→ की सरकार पहली तानाशाह सरकार थी
→ रूसो का अंधभक्त, social contract को बाइबिल माना
→ दांते को मृत्युदण्ड दे दिया

थर्मोडोरियन प्रतिक्रिया → 1794 में प्रतिक्रिया स्वरूप, रोबेस्पियर की हत्या कर दी गई

* **तीसरा चरण** :- प्रतिक्रांति के नाम से जाना गया, थर्मोडोरियन प्रतिक्रिया के कारण
  - → क्रांति विरोधी नेताओं को जनता ने समर्थन दिया
  - → निदेशक मण्डल का गठन किया जिसमें बार्रा जैसे विलासी एवं कम प्रतिभावान सदस्यों की अधिकता थी। पुराने तौर तरीके फिर से कायम होने लगे
  - → सार्वजनिक मताधिकार की जगह संपत्ति के अधिकार पर आधारित मताधिकार को मान्यता मिली
  - → जनसामान्य की अवहेलना, परम्परा एवं सत्ता की पुनर्प्राप्ति ने, 1799 में नेपोलियन क्रांति का अंतिम चरण समाप्त हुआ एवं नेपोलियन का युग शुरू हुआ।
  - → **डाइरेक्टरी** :- 1795 में नेशनल कन्वेंशन ने एक 5 सदस्यीय समिति गठित की जिसमें कार्यपालिका की समस्त शक्ति केंद्रित थी
    1799 में अराजकता की स्थिति में नेपोलियन को आमंत्रित किया था।

'जार्ज लेब्रेल' के अनुसार, "पहली बार क्रांति कुलीन वर्ग ने की, फिर उसका नेतृत्व बुर्जुआ वर्ग के हाथों में गया, तत्पश्चात् निम्न वर्ग का प्रभाव देखा गया अंततः क्रांति पुन: दक्षिणापंथ की ओर मुड़ गई।

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date :

नेपोलियन ⇒ man of Destiny, (शुरुआत = सामान्य सैनिक)

उत्थान :
→ इटली अभियान पर रिवोली एवं आर्कोला जैसे युद्ध जीते
→ आस्ट्रिया को पराजित कर "कैम्पोफोर्मिया की संधि" की जिसमें विलक्षण कूटनीतिक क्षमता का परिचय दिया
→ नेपोलियन युद्ध का खर्च विजित क्षेत्रों से निकालता था अतः फ्रांस की जनता को बिना 'कर' के नये प्रदेश मिलते चले जा रहे थे जिससे जनता में प्रसिद्धि मिली
→ पूंजीपति वर्ग ने भी नेपोलियन के स्वतंत्र में साथ दिया क्योंकि अर्थतंत्र में मनवांछित विकास के लिए नियंत्रित अर्थव्यवस्था जरूरी है जो केवल नेपोलियन दे सकता था।
→ 1801 में ब्रिटेन से 'आमियाँ की संधि' (अमीन्स) हुई जिसमें फ्रांस से जीते उपनिवेश वापस किए गये एवं उसके नये गणतंत्र को मान्यता दे दी।

कथन :- नेपोलियन स्वयं कहता था, "मैं तो युद्ध स्थलों में पनपा हूँ, वहीं मुझे सत्ता मिली है अगर मैं एक बार भी हार जाऊँ तो जनता मुझे अस्वीकार कर देगी।"

⇒ 1803 में अमीन्स संधि को ठुकराकर, फ्रांस एवं ब्रिटेन के बीच युद्ध के हालात बनने लगे।
[ब्रिटेन के साथ → आस्ट्रिया, रूस एवं स्वीडन थे]

⇒ Oct-1805 ⇒ ट्राफलगर का जल युद्ध ⇒ ब्रिटेन की भारी विजय

⇒ Dec-1805 ⇒ आस्टरलिट्ज युद्ध ⇒ प्रशा एवं आस्ट्रिया की सेना को नेपोलियन ने भारी शिकस्त दी

⇒ अब नेपोलियन ने 14 जर्मन प्रदेशों को जीतकर "राइन राज्य संघ" बनाया जहाँ पवित्र रोमन साम्राज्य का पतन हुआ। जो नेपोलियन को संरक्षक मानते थे। (1806)

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date : / /

⇒ 1807 ⇒ टिलसिट की संधि ⇒ रूस को फिनलैण्ड में नेपोलियन ने भारी शिकस्त दी

⇒ 1809 ⇒ स्पेन के शासक चार्ल्स चतुर्थ को हटाकर अपने भाई को बैठा दिया जिससे वहां आंतरिक प्रतिरोध शुरू हो गया।

अंततः ऑस्ट्रिया ने पुनः नेपोलियन पर आक्रमण कर दिया पर, हार के परिणाम स्वरूप, अपमान जनक संधि (वियना) एवं राजकुमारी मेरिया लुइसा का विवाह नेपोलियन से करना पड़ा।

⇒ ब्रिटेन ने स्पेन की सहायता की एवं सेनापति वैलेजली ने स्पेन को 1812-13 में फ्रांस से आजाद करा लिया यह स्पेन का नासूर ही नेपोलियन के पतन की शुरुआत बना। जिसमें करीब 3 लाख फ्रांसीसी सेना मारी गई।

दूसरी ओर 1812 में, नेपोलियन ने रूस पर 6 लाख की सेना के साथ आक्रमण कर दिया सर्दी के समय मोस्को में, 5 लाख सैनिक मारे गये।

⇒ 1813-14 :- प्रशा, आस्ट्रिया, रूस, स्वीडन, ब्रिटेन } राष्ट्रों का गुट → नेपोलियन की भारी पराजय (लिपजिग)

⇒ 1815 ⇒ वाटरलू का युद्ध ⇒ नेपोलियम की पूर्ण पराजय एवं निर्वासित कर सुनसान द्वीप सेंट हेलेना भेज दिया जहां 1821 में उसकी मृत्यु हो गई।

✱ **पतन के कारण** :- (1) अधिनायकवाद :- सब कुछ खुद नियंत्रित किया

(2) महाद्वीपीय व्यवस्था :- व्यापार की रुकावट किसी एक के लिए हानिकारक नहीं होती। यह दोनों पक्षों को नष्ट कर देती है।

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date :

(3) युद्ध सेनाओं से जीता जा सकता है पर जब उस देश के सभी नागरिक शामिल हो जाए (जैसा स्पेन में हुआ था) तब कोई भी महाशक्ति युद्ध नहीं जीत सकती।
स्पेन के साथ, नेपोलियन के सैनिकों को हर मोर्चे पर लड़ना पड़ा जिसमें न तो शरण मिली और न ही अनाज।

(4) फ्रांस की जलसेना काफी कमजोर थी जबकि संसार का 75% जल ही है तब विश्वविजेता नहीं बना जा सकता।

(*) नेपोलियन – एक क्रांतिपुत्र या क्रांतिहन्ता।

⇒ क्रांतिपुत्र :- (1) उसका उदय क्रांति के समय हुआ और उन्हीं परिस्थितियों से वह शिखर पर पहुंच गया।

(2) सामाजिक समानता की स्थापना की जो उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि थी। उसने सिद्धांत: माना कि सभी व्यक्तियों को अपनी प्रतिभा का विकास करने का (अवसर मिलना) चाहिए।

(3) क्रांति से उत्पन्न अव्यवस्था को समाप्त कर सुदृढ़ शासन को स्थापित किया।

(4) नेपोलियन ने क्रांति के मूल्यों जैसे, सामंतवाद की समाप्ति एवं गिल्ड प्रणाली की समाप्ति, आदि को आगे बढ़ाया।

(5) अपनी विजयों से यूरोप में फ्रांस का गौरव बढ़ाया।

⇒ क्रांतिहन्ता :- क

(1) क्रांति के सिद्धांतों 'राष्ट्रीयता' एवं स्वतंत्रता के विरुद्ध कार्य किए-
वह स्वतंत्रता को राज्य की कुशलता में बाधक मानता था। कठोरता से उसने इसका दमन किया एवं मताधिकार को अत्यंत सीमित कर अंततः छीन लिया।

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

राष्ट्र में जासूसों के जाल बिछाए गये एवं मनमाने ढंग से लोगों को नजरबंद कर दिया गया।

(२) विश्वबंधुत्व की जगह वह 'अधीनतापूर्ण बंधुत्व' को मानता था।
उसने कई बार कहा, " उसके विजय अभियान क्रांति के उद्देश्य को पूरे यूरोप में पहुँचाने के लिए है।

(३) प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा दिए
(४) स्वयं सम्राट की उपाधि धारण की जो पुरानी परंपरा की पुनरावृत्ति थी।
(५) अतिशय केंद्रीकरण की नीति अपनाई जो क्रांति के विरूद्ध थी।

⊛ फ्रांस की क्रांति के परिणाम / प्रभाव ⊛

इस क्रांति ने विश्व के अन्य देशों के लिए राजनीतिक आदर्श प्रस्तुत किया एवं समानता, स्वतंत्रता एवं बंधुत्व की भावना, ~~को~~ विश्व के राजनीतिक विकास का मूलमंत्र स्थापित हुई।

(#) राजनीतिक परिणाम:- यह क्रांति मूलतः राजनीतिक क्रांति थी -

(1) इसने सामंतवाद का अंत कर दिया एवं जनसाधारण को उचित सामाजिक स्थान दिलाए। जिसने लोकतंत्र को सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

(2) लोकतंत्रवाद ने पहली बार फ्रांस में नागरिक अधिकारों की नींव रखी एवं यूरोप और विश्व के अन्य देशों पर इसका व्यापक प्रभाव दृष्टिगोचर हुआ

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

(3) राजा के दैवीय अधिकारों / प्रतिनिधित्व की समाप्ति कर जनता के मत की प्रधानता स्थापित की।
अब राजकीय पदों पर नियुक्ति के लिए योग्यता को आधार बनाया गया।

(4) राष्ट्रीयता की भावना का प्रतिपादन किया।
आधुनिक विश्व के अनेक देशों ने इसी से प्रेरित होकर स्वतंत्रता युद्ध लड़े।

रूसो का कथन था: "वस्तुतः जनता से राज्य या राष्ट्र का निर्माण होता है।" यह कथन आज भी संपूर्ण विश्व के लिए आदर्श है

(#) आर्थिक परिणाम :- सामंतवादी व्यवस्था की समाप्ति पर व्यापार पर अहस्तक्षेप (लैसेज फेयर) की नीति अपनायी गई जिससे पूंजीवाद का उदय हो सका।
इसी नीति के परिणाम-स्वरूप उद्योग-धंधों का अत्याधिक विकास हुआ और इंग्लैण्ड के समक्ष आर्थिक क्षेत्र में प्रमुख प्रतिद्वंदी बनकर उभरा।

(#) सामाजिक परिणाम :- समानता की स्थापना जिसमें विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों का अंत हुआ स्थूल रूप से इसमें समाजवादी सिद्धांतों के तत्व दृष्टिगोचर होते हैं।

(#) शैक्षिक एवं सांस्कृतिक परिणाम :- चर्च की अधीनता से शिक्षा को धर्मनिरपेक्ष एवं सार्वभौमिक रूप प्रदान किया गया जिसने यूरोप में प्रचलित प्राचीन मान्यताओं, कुप्रथाओं एवं अंधविश्वासों को पूर्णरूपेण नष्ट कर दिया।

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date :

(*) औद्योगिक क्रांति (*)

- इसमें मुख्यत: दो बातें शामिल हैं- परिवर्तन और विकास।

इसका अर्थ है → उत्पादन एवं यातायात प्रक्रिया में परिवर्तन
→ आर्थिक एवं टेक्नोलॉजिकल विकास
→ हाथआधारित श्रम का मशीनरी उद्योग में संक्रमण

- आर्थिक रूप से तीन पहलू → आर्थिक संगठन
→ उत्पादन तकनीक
→ व्यापार ढांचा

- यह शब्द मुख्यत: ब्रिटेन में 1750-1850 के दौरान हुए उत्पादन एवं औद्योगिक चरमोत्कर्ष से संबंधित है जो धीरे-2 पूरे यूरोप में फैल गया।

(#) क्रांति ब्रिटेन में ही क्यों?

ब्रिटेन जैसे हालात, हालैण्ड एवं फ्रांस में थे परन्तु हलैण्ड के पास, लोहा एवं कोयला (कच्चा माल) उपलब्ध नहीं था जबकि फ्रांस उस दौरान क्षेत्र विस्तार को लेकर लालायित था। अन्य मुख्य कारण थे-

(1) भौगोलिक परिस्थिति एवं प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता:-

समुद्री किनारों पर बंदरगाह, जो जहाजों से माल लाने ले जाने के अनुकूल थे। एवं समुद्री सीमा होने से बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित था।

द्वीपों में कोयला एवं लोहा प्रचुर मात्रा में मिलता है वहीं नदियाँ होने से विद्युतशक्ति उत्पादन आसान होता है।

मशीनों के निर्माण में लोहा जरूरी था और ऊर्जा की मांग कोयले ने पूरी की।

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

(2) सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन

अमेरिका एवं फ्रांस से करीब सवा सौ साल पहले 1640 में मध्यम वर्ग ने क्रांति की थी जिससे देश के शासन एवं समाज में मध्यम वर्ग हावी था अतः इस क्रांति का प्रारंभ यहीं से हुआ क्योंकि कृषि दासता एवं श्रेणी व्यवस्था के अंत से व्यापार के अनुकूल वातावरण तैयार हो गया था।

(3) पर्याप्त पूंजी:- मध्यवर्गीय हाथों में सत्ता होने के कारण व्यापारियों ने अपना व्यापार एवं पूंजी बढ़ाने के यथाशक्ति श्रेष्ठ प्रयास किए। जिसमें तीन प्रकार प्रमुख हैं-

(i) लगातार युद्धों से, सरकार इन व्यापारियों से काफी कर्ज लेती थी जिससे भारी ब्याज के रूप में धनसंचयन होता था

(ii) औपनिवेशिक साम्राज्य के व्यापार पर एकाधिकार ने, पूंजी संचयन को अपार कर दिया

(iii) विशेषकर, 1757 के बाद, भारत की लूट ने अंग्रेजी व्यापारियों को अत्यंत अमीर बना दिया

(4) कृषि के क्षेत्र में परिवर्तन:- औद्योगिक क्रांति से पहले ही इंग्लैण्ड में कृषि क्रांति हो चुकी थी जिसमें-

(i) टाउनशेण्ड ने लोगों को फसल बदल कर बोने के लाभ समझाएं
(ii) कृषि में यंत्रों का अधिकतम उपयोग किया गया
(iii) उद्योगों के अनुकूल, जानवरों का पालन एवं प्रचलन बढ़ा
(iv) कृषि ~~क्षेत्र~~ क्रांति के कारण छोटे किसान भूमिहीन हो गये जो स्वतंत्र मजदूर बन गये। अतः पूंजी एवं श्रमशक्ति का समन्वय ही औद्योगिक क्रांति का आधार बना। 081

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

(5) वैज्ञानिकों का अभ्युदय:- इसको, इस क्रांति का प्रारंभिक कारण माना जा सकता है-

जैसे:- 1733 में 'फ्लाइंग शटल' (जॉन के का आविष्कार) ने वस्त्र उद्योग में क्रांति ला दी। (तेज बुनाई)

1764 ⇒ हारग्रीव्स ने 'स्पिनिंग जेनी' की खोज की जिससे एक साथ 8 सूत काते जा सकते थे

1765 ⇒ (कुछ विद्वान इसे औद्योगिक क्रांति की शुरुआत मानते)

1785 ⇒ कार्टराइट ने पावरलूम का आविष्कार कर लिया (शक्ति-चालित करघा)

अतः वस्त्र उद्योग इस क्रांति का प्रथम अंग बना

1769 ⇒ जेम्सवाट के भाप इंजन ने मशीनों की रफ्तार बढ़ाने के साथ-2, रेल एवं जहाज की रफ्तार तेज करने का कार्य किया अतः उद्योग तेजी से फले फूले।

1856 ⇒ बेसेमर प्रक्रिया ⇒ जल्दी एवं सस्ता इस्पात बनाने की विधि ने मशीन निर्माण की प्रक्रिया तेज कर दी

⇒ आवागमन साधनों का अभ्युदय:-

- सड़क निर्माण:- स्कॉटलैण्ड के मैकाडम ने कोलतार की खोज की
- ब्रिजवाटर नहर:- ब्रिडले ने तैयार की जिसका अनुसरण करते हुए प्रमुख शहरों को आपस में जोड़ा गया
- 1814:- स्टीफेंसन ने भाप-चालित इंजन की खोज की जो लोहे की बनी रेल पर चलता था, (लोकोमोटिव) पहले घोड़े खींचते थे।
- 1807:- फुल्टन ने वाष्पचालित नौका बनाई जिससे बाद में बड़े जहाज बनाने की रूपरेखा रखी

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

⇒ संचार साधनों की खोज :-
→ टेलीग्राफ की खोज
→ 1876 में ग्राहमबेल ने टेलीफोन की खोज

(6) कुशल एवं सस्ते मजदूर :-

चिकित्सा की उचित व्यवस्था ने जनसंख्यावृद्धि की जिसमें मजदूर संख्या में वृद्धि के कारण श्रम सस्ता हो गया।
इसके अलावा 17वीं सदी में अन्य देशों से मजदूर एवं कुशल कारीगर भागकर ब्रिटेन आ गये क्योंकि उन देशों में धार्मिक अशांति एक रोजगार के अवसर कम बेहतर थे।

(7) पर्याप्त उपनिवेश :- 18वीं सदी के मध्य तक ब्रिटेन के पास भारत, पूर्वी कनाडा, उ. अमेरिका, पश्चिमी अफ्रीका आदि उपनिवेश थे जो उद्योगों के कच्चे माल एवं लेबर की जरूरतों को पूरा करते थे।

(*) औद्योगिक क्रांति के परिणाम :- (*)
जब घरेलू उत्पादन में मशीनों के प्रयोग, श्रम विभाजन एवं तकनीक आदि का योग पाकर बड़े पैमाने पर उत्पादन प्रारंभ हो गया, जिसे औद्योगिक क्रांति कहा गया।
इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रांस के समाजवादी नेता ब्लांकी ने 1837 में किया।

(1) उत्पादन में वृद्धि एवं व्यापार का विकास
(2) गृह उद्योगों का ह्रास एवं किसान अब स्वतंत्र मजदूर बन गये
(3) बड़े-2 नगरों का निर्माण
(4) साम्राज्यवाद (उपनिवेशवाद) का विकास, जिसके कारण WW1 हुआ
(5) बेकारी का समस्या - व्यापारिक मंदी के दौरान मजदूरों की छटनी करने पर बेरोजगारी बढ़ गई।

Scanned by CamScanner

Page :
Date : / /

(6) जनसंख्या वृद्धि
(7) जनसंख्या स्थानांतरण - कृषि एवं घरेलू उद्योगों से आबाद क्षेत्र अब खाली होने लगे
(8) नया वर्ग-विभेद :- तीन नये वर्ग का उदय -
(i) औद्योगिक वर्ग → पूंजीपति वर्ग
(ii) शिक्षित मध्यम वर्ग → वैज्ञानिक, प्रबंधक, कुशल शिल्पी
(iii) श्रमिक वर्ग →
(9) मजदूरों की दुर्दशा → मकानों में हवा, पानी, बिजली, सफाई आदि का अभाव

✱ इंग्लैण्ड की बाइबिल :-
↳ तीन राजनीतिक अभिलेख

→ 1215 → मैग्नाकार्टा (महाधिकार पत्र) → शासन में सुधार के लिए मांगपत्र
↳ राजा जॉन (प्लेंटाजेनेट काल)

→ 1628 → अधिकार याचना पत्र → (स्टुअर्ट काल)
↳ संसद के दोनों सदनों ने 'चार्ल्स-I' के समक्ष याचना की कि संसद की सहमति के बिना, किसी व्यक्ति को उपहार, ऋण या Tax देने को विवश न किया जाए

→ 1689 → बिल ऑफ राइट्स (अधिकार बिल)
↳ शासन-शक्ति की सर्वोच्च अधिकारिणी संसद है न कि सम्राट
↳ राजा विलियम + जेम्स-II की बेटी मेरी-II (हैनोवर काल)

→ आधुनिक मैग्नाकार्टा :- 1832 में प्रथम सुधार अधि० (इंग्लैंड में)

Scanned by CamScanner

Page : ______
Date : __/__/__

❋ धर्मसुधार ❋ :- (Reformation)

पुनर्जागरण एवं प्रबोधन के विचार ने जब धार्मिक क्षेत्र पर अपना असर छोड़ा तब धर्मसुधार सुधार शुरु हो गये। जिसके प्रमुख तत्व थे -

(i) ईसाईयों का नैतिक एवं धार्मिक उन्नयन
(ii) पोप के सीमाविहीन अधिकारों पर लगाम
(iii) चर्च में व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर करना

⇒ प्रारंभिक सुधारक :- इसकी पृष्ठभूमि 14वीं के अंत में इंग्लैण्ड में बनने लगी थी। इसी के प्रतिक्रिया स्वरूप 1401 में इंग्लैण्ड के पार्लियामेंट ने धर्म विरोधियों को जलाने का कानून बना दिया।

जॉन वाइक्लिफ # (The morning star of Reformation)

- इनके अनुयायी ⇒ 'लोलार्डस'
- "भ्रष्ट एवं विवेकहीन पादरियों के उपदेश व्यर्थ है"
- पहली बार अंग्रेजी में बाइबिल का अनुवाद करवाया
- शिष्य ⇒ 'जॉन हस' को 1415 में जिंदा जला दिया गया (पोप के विरोध करने पर)

⇒ प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार :- ❋
- (i) जर्मनी के 'मार्टिन लूथर'
- (ii) स्विटजरलैण्ड का 'ज्विंगली'
- (iii) फ्रांस का 'काल्विन'

मार्टिन लूथर # 1517 में प्रयास शुरु किए

- "95 Thesises" ⇒ पोप के अधिकृत पदाधिकारी 'टेट्जेल' द्वारा पापमोचन पत्रों की बिक्री से बौखलाकर, विरोधी विचारों का संकलन गिरिजाघर के प्रवेश द्वार चिपका दिया
- जर्मनी शासक 'सकसेनी' (चर्च प्रभुसत्ता का विरोधी) ने पूर्ण संरक्षण दिया

Scanned by CamScanner

⇒ 1529 ⇒ प्रोटेस्टेन्टवाद की वास्तविक उत्पत्ति

→ लूथरवाद :- 1555 में "आग्सबर्ग की संधि" हुई, रोमन सम्राट 'फर्डिनेंड' एवं जर्मन 'डाइट' के बीच हुई जिसमें प्रत्येक राज्य के शासक को एवं प्रजा को अपना धर्म चुनने की स्वतंत्रता दी गई। हालांकि लोगों के पास कैथोलिक या लूथरवाद चुनने का विकल्प था नाकि तीसरा।

ज्विंग्लीवाद :→ 'प्रणेता' → स्विटजरलैण्ड का ज्विंगली

- 'रिफॉर्म्ड चर्च' की स्थापना।
- नगरों तक सीमित रहा।
- इरैस्मस से प्रभावित
- 1531 में "कापेल की संधि" द्वारा (कैथोलिक के साथ) मान्यता

काल्विनवाद :- प्रणेता :- फ्रांस का 'काल्विन'

- काल्विन ज्विंगली से प्रभावित होकर स्विटजरलैण्ड आ गया
- बाइबिल का 'फ्रेंच अनुवाद' करवाया।
- 'प्रोटेस्टेंट पोप' की उपाधि

⇒ 17 वीं सदी आते-2 काल्विनवाद पूरे यूरोप मे फैला जबकि लूथरवाद जर्मनी तक सीमित रहा।

⇒ 'बेबर' ने सिद्ध किया → प्रोटेस्टेन्ट आंदोलन से पूंजीवाद का विकास हुआ।

इंग्लैण्ड में धर्मसुधार :-

- 'एंग्लिकन विचारधारा' का जन्म जो पूर्णतः प्रोटेस्टेंट नहीं था
- 16वीं सदी में 'राष्ट्रीय चर्च' की स्थापना की
  - कर्मकाण्ड में 'रोमन कैथोलिक'
  - धर्मशास्त्र संदर्भ में → काल्विनवादी

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date :

(#) कैथोलिक धर्मसुधार (#) (प्रतिवादी धर्मसुधार)

16 वीं सदी के मध्य में कैथोलिक चर्च ने आत्मनिरीक्षण शुरू किया

(1) जेसुइट :- स्पेन के 'इग्नेशियस लोयला' ने 1534 ई. में चर्च की पुनरुद्धार के लिए, सेवाभाव से ओतप्रोत योग्य प्रचारकों का एक दल बनाया। जिसे "Society of Jesus" कहा गया एवं इसके सदस्य 'जेसुइट' कहलाए। मानवसेवा से प्रेरित इन सेवा सदस्यों को 'मिशनरी' कहा गया। जिन्होंने यूरोप से बाहर चीन, भारत, जापान, अमेरिका एवं मुस्लिम राष्ट्रों में आक्रामक प्रचार किया।

(2) "इन्क्वीजिशन" :- रोम की एक विशेष धर्मअदालत
- 1542 में पोप 'पॉल तरकीय' ने पुनर्जीवित किया
- नास्तिकों को ढूंढकर, उनका दमन

(3) ट्रेंट की सभा (1545) :- इटली के ट्रेन्ट में आयोजित जो 18 वर्षों तक समय-2 तक चली
- चर्च में व्यापक सुधार हुए
  - उपदेश जनभाषा में एवं अन्य भाषाओं (लैटिन के अतिरिक्त) को मान्यता
  - पादरियों को अनिवार्य शिक्षा
  - पापमोचन पत्रों की बिक्री बंद
  - पादरी कठोर एवं सादा जीवन बिताएंगे

Ques :- लूथरवाद एवं काल्विनवाद में तुलना
- सकरात्मक
- नकरात्मक

| (12) फिर

search "MPPSC & PEB(VYAPAM)

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date : / /

समाजवाद

इसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा में मानी जाती है जिसका अर्थ है- साथी या सहयोगी।

⇒ प्रबोधन के 'उदारवाद' से समानता थी → दोनों तर्कवाद पर आधारित → प्रगति में आस्था → आलौकिकता का विरोध
परन्तु कुछ विरोधाभास भी थे। (राज्य अधिकारों को लेकर)

⇒ औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप दो वर्गों का उदय हुआ → पूंजीपति (बुर्जुआ) → सर्वहारा (प्रोलीटेरियेट)

⇒ सर्वहारा वर्ग के कल्याण से प्रेरित था - 'समाजवाद'। क्योंकि इस वर्ग की हालात अत्यंत दयनीय हो गई थी।

(इंग्लैण्ड)
रावर्ट ओवन :- यूरोप के "समाजवादी आंदोलन का जनक"

Books:) "New View of Society" → जो रूसो के विचार से प्रेरित लगती है
↓
रूसो का कथन → "किसी आदमी को इतना अमीर नहीं होना चाहिए कि वह दूसरे को खरीद ले एवं इतना निर्धन भी नहीं होना चाहिए कि अपने आप को बेच दे।"

→ इन्हीं से प्रेरित ⇒ इंग्लैण्ड में 'सहकारी समाजवाद' के रूप में व्यापक आंदोलन शुरू हुआ जिसमें 1827 में पहली बार समाजवाद शब्द का प्रयोग हुआ।

इसी से प्रेरित "चार्टिस्ट आंदोलन" भी था जिसने कई सुधार किए

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date : / /

कार्ल मार्क्स एवं समाजवाद

→ आधुनिक समाजवाद विचारों के प्रणेता
→ जर्मनी की पृष्ठभूमि में 'लसैल' के प्रारंभिक प्रयत्नों के उपरांत कार्ल मार्क्स का अभ्युदय हुआ

→ "साम्यवादी घोषणा पत्र" (1848) ⇒ 'पेरिस के एंजेल्स के साथ मिलकर तैयार किया
→ स्वतंत्रता - समानता - बंधुत्व के नारे का जनता के हित में कोई महत्व नहीं है। वास्तविक लड़ाई 'आर्थिक' है।

→ इतिहास की "भौतिकवादी व्याख्या" की [पूरे इतिहास को वर्ग संघर्ष का इतिहास कहा]
→ इतिहास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य "विभिन्न वर्गों का पारस्परिक संघर्ष है।"
जिसकी उत्पत्ति उस समय की आर्थिक परिस्थितियों से होती है।
अर्थात् इतिहास की धारा को उत्पादन के साधन से जोड़ा।

→ प्राचीन समाज का आधार 'दासता', सामंतवादी समाज का आधार 'भूमि' एवं मध्यमवर्गीय समाज का आधार 'नकद पूंजी' है

→ सामाजिक विकास को "द्वन्दात्मक भौतिकवाद" के परिपेक्ष्य में देखा

→ प्रसिद्ध कृति → 'दास कैपिटल' (1867)

→ "मार्क्सवाद" → एंजेल्स एवं मार्क्स ने इसको 'वैज्ञानिक समाजवाद' की संज्ञा दी

→ प्रथम अंतर्राष्ट्रीय संघ :- (1864) → IWA (अंतर्राष्ट्रीय कामगार समिति)
→ लंदन में
→ मार्क्स एवं एंजेल्स के अतिरिक्त इटली का मेजिनी आदि ने भाग लिया

→ द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय संघ :- 14 July, 1889 को पेरिस में, 20 देशों के 400 प्रतिनिधि (समाजवादी) शामिल हुए
→ 1 may → मजदूर एकता दिवस घोषित (अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस)

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date : / /

रूस में समाजवाद

पहली बार "दास कैपिटल" का विदेशी (रूसी) भाषा में अनुवाद हुआ

1883 ⇒ "रशियन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी" की स्थापना (मार्क्स अनुयायी लेखानोव ने)

1898 ⇒ रशियन सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी बनी

1903 ⇒ ये दल दो भागों में बंट गया -

- मेनशेविक (अल्पसंख्यक) :- मजदूरों के साथ अन्य वर्गों के सहयोग से रूस में जनतंत्र स्थापना का हिमायती
- बोल्शेविक (बहुसंख्यक) :- श्रमिक क्रांति के पक्षपाती
  - प्रसिद्ध नेता → 'लेनिन' (ब्लादिमीर इलिच उलियानोव) (1917 में समाजवादी क्रांति का नेता)
  - जो केवल श्रमिकों एवं गरीब कृषकों का समर्थक था।

⇒ तृतीय अंतर्राष्ट्रीय संघ :- 'कॉमिन्टर्न' नाम दिया
1919 में

⇒ 1970 ⇒ में चीन ने नया विकल्प दिया - अनुशासन, सरकार व नियंत्रित खुलापन

इसी के फलस्वरूप, समाजवाद हर जगह थोड़ा-2 रहा, जबकि मार्क्सवाद केवल दमन एवं डंडे के दम पर रहा।

search "MPPSC & PEB(VYAPAM)

Scanned by CamScanner

रूस की क्रांति → प्रमुख नेता लेनिन एवं ट्राटस्की

इस क्रांति को लाने में श्रमिकों, कृषकों एवं बुद्धिजीवियों ने संयुक्त भूमिका निभाई।

इसी के फलस्वरूप विश्व के लगभग आधे क्षेत्रों तक समाजवाद के प्रभाव को पहुंचाया।

प्रमुख कारण

(राजनैतिक कारण)

(1) **शासकों की दमनात्मक नीति** :- तत्कालीन जार निकोलस II (1894-1917) अपने को दैवीय शक्तियों के (ईसा मसीह) वंशजों से जोड़ता था।

निरंकुश शासन, व्यक्तिगत निष्ठा पर आधारित शासन का हिमायती था।

⇒ **खूनी रविवार** :- 22 Jan-1905 में, जार के नीतियों गेपेन के नेतृत्व में, अपनी मांगों को लेकर जा रहे 130 निहत्थे मजदूरों (पत्नी, बच्चे भी) की, सैनिकों ने हत्या कर दिया। जिसमें मुख्य भूमिका, रानी जरीना की थी एवं सहयोगी पादरी रासपुटिन था।

⇒ **1905** :- रूस जापान युद्ध में रूस की हार हो गई

⇒ **Oct, 1905** :- रूसी संसद ड्यूमा को लोकतांत्रिक ढंग से चलाने की बात की गई परन्तु जार ने सभी प्रतिनिधि अपने विश्वास चुने। एवं 1906-07 में इसका विघटन कर दिया गया।

उपर्युक्त कारणों से लोगों में जार के प्रति असंतोष अपने चरम पर पहुंचा

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

(2) आर्थिक कारण:- यद्यपि रूस कृषि प्रधान देश था। 1861 में कृषि दासता की मुक्ति की घोषणा हुई थी परन्तु व्यवहार में कोई कानून नहीं बनाया गया। इसका प्रमाण था कि 19 वीं सदी के अंत तक 1 करोड़ के पास 19 करोड़ एकड़ भूमि थी जबकि 30,000 भूस्वामियों के पास 18 करोड़ एकड़ भूमि थी।

1905-10 के बीच, कृषि पर मौसम की मार पड़ी जबकि यहां कोई खास औद्योगिक विकास नहीं था फलस्वरूप इसके जार ने कोई खास आर्थिक प्रबंध नहीं किए

(3) समाजवाद का उदय (विकास):-

(4) श्रमिकों की दयनीय हालात:-
1908 में रूसी आयोग की रिपोर्ट → 10 वर्ग फुट के कमरे में 2 या अधिक मजदूरों का परिवार रहता था जिसकी कुल 60% जनसंख्या थी। एवं उन्हें फ्रांस व जर्मनी की तरह अधिकार प्राप्त नहीं थे

(5) सामाजिक असमानता
(6) अल्पसंख्यकों का अपमान

(*) रूसी क्रांति का स्वरूप (*)

→ फरवरी की क्रांति:- देश में अकाल की स्थिति के बावजूद मूर्ख जार ने लाखों कृषकों को हटाकर किलों में झोंक दिया। लाखों सैनिक मारे गये जबकि देश में खाद्य की कमी हुई और महंगाई के कारण आम जीवन निर्वाह काफी कठिन हो गया।

✓ 7 मार्च-1917 [रूस में 22 Feb 1917] को पेट्रोग्रेड की सड़कों पर किसान व मजदूरों ने जुलूस निकाला एवं 'रोटी दो' के नारों से लूट मच गई। हालांकि इसमें केवल दो लोगों की मरने की खबर थी

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

V. **15 March - 1917** :→ जार ने अपना पद छोड़ दिया एवं केरेंस्की के नेतृत्व में अस्थायी सरकार की घोषणा की गई जिसमें जमींदार, पूंजीपति सभी शामिल थे। बोल्शेविकों ने सरकार के सामने चार मांगें रखी-

(i) शांति अर्थात रूस युद्ध से तुरंत हटे
(ii) भूमिहीनों को जमीन मिले
(iii) उद्योगों पर मजदूरों का नियंत्रण हो
(iv) गैर रूसी राज्यों को बराबरी का दर्जा मिले

अक्टूबर क्रांति मात्र सत्ता परिवर्तन नहीं थी बल्कि फ्रांसीसी क्रांति की तरह समाजवादी क्रांति थी।

⇒ **अक्टूबर की क्रांति** :- केरेंस्की की सरकार उपर्युक्त मांगों पर कोई खास ध्यान नहीं दिया। इसी बीच अप्रैल में लेनिन स्विटजरलैण्ड से वापस आए फलतः 7 नवम्बर (रूस में 25 अक्टूबर) को बोल्शेविक क्रांति हुई केरेंस्की देश छोड़कर फरार हो गया।

⇒ **8 नवम्बर** ⇒ लेनिन की सरकार गठन किया गया जिसे "काउंसिल ऑफ पीपुल्स कॉमिसर्स" का नाम दिया गया जिसके सभापति लेनिन, ट्राटस्की को युद्धमंत्री बनाया गया।

Scanned by CamScanner

⇒ 3 march-1918 :- जर्मनी के साथ 'ब्रेस्टलिटोवस्क संधि' हुई एवं रूस WW-I से अलग हो गया।

फलस्वरूप मित्र राष्ट्रों की सह पर रूस में गृह युद्ध के हालात उत्पन्न हो गये। अंततः ट्राटस्की के नेतृत्व में 'लाल सेना' ने गृहयुद्ध में पूर्ण सफलता पाई एवं 'चेका' नामक विशेष अदालत बोलशेविकों ने गठित की जिसमें क्रांतिविरोधी (10,000 से ज्यादा) लोगों को मौत की सजा दी गई। सर्वप्रथम नवीन संविधान बना जिसके तहत RSFSR (रशियन सोशलिस्ट फेडरल सोवियत रिपब्लिक) की स्थापना की गई। इस संविधान का मूल उद्देश्य था- " संपूर्ण सत्ता पर ग्रामों व नगरों के सोवियतों में शामिल श्रमिकों एवं कृषकों की अधिकार स्थापना।"

⇒ लेनिन :- मार्क्स का अध्ययन किया एवं 1905 ई. की क्रांति में सक्रिय भागीदार रहा उसके बाद यूरोप के अन्य देशों में छुप-छुपकर क्रांति को सक्रिय करता रहा जिसे 'इस्क्रा' नामक पत्र से रूस संचालित किया।

⇒ NEP-1921 :- (नई आर्थिक नीति-लेनिन)

दूरदर्शिता से काम लेते हुए लेनिन ने पूंजीवादी तत्वों के सहयोग से मिश्रित आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था लागू की। जिसमें निम्न तत्व निहित थे-

(i) कृषि का पुनरूद्धार :-

- सर्वप्रथम कृषकों को अतिरिक्त उपज बेचने एवं धन अर्जित करने का अधिकार मिला
- भूमि पर एकाधिपत्य समाप्त हो गया एवं कृषि का राष्ट्रीयकरण
- सामूहिक खेती स्थापित की गई

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

इन्ही नीतियों से सोवियत संघ बड़े पैमाने पर कृषि वाला देश बन गया।

(ii) उद्योगों का पुनरुद्धार :-
→ 20 से कम मजदूर वाली औद्योगिक इकाई को उत्पादन विक्रय की स्वतंत्रता मिल गई - (1922 में 4000 लाइसेंस जारी किए)
→ सीमित पूंजी में विदेशी कंपनियों को उद्योग लगाने की छूट

(iii) श्रमिकों को लाभ :- 1922 में श्रमिक संहिता लागू जिसमें-
(a) 8 घंटे का श्रम
(b) दो सप्ताह की वैतनिक छुट्टी
(c) सामाजिक बीमा लाभ

(iv) मुद्रा व्यवस्था :- 1922 में 10 रूबल के नोट जारी हुए। इसमें अन्य बातें लागू हुईं -
(a) सरकारी बैंकों द्वारा ऋण व्यवस्था
(b) राज्य की ओर से सहायता
(c) रिजर्व फण्ड का उपयोग व्यवसायिक उन्नति हेतु किया

(*) NEP का रूसी अर्थव्यवस्था पर प्रभाव :- (रूसी क्रांति के परिणाम)

(i) सामाजिक प्रभाव :- शोषित वर्गों को सर्वांगीण सुविधाएँ दी गईं।

(a) स्त्रियों की स्थिति में व्यापक सुधार :- सर्वप्रथम, पुरुषों के समान स्त्रियों को मताधिकार दिया गया। उन्हें सेना, कारखानों, राजनीति, न्यायालयों, अस्पताल, शिक्षा संस्थाओं में उच्च पद दिए गये।
उनकी सुविधा हेतु शिशुपालन शालाएँ, सामुदायिक पाठशालाएं इत्यादि खोली गईं।

Scanned by CamScanner

(ii) सांस्कृतिक प्रभाव :- सर्वप्रथम, सभी विषयों को चर्च के प्रभाव से मुक्त कर दिया गया।

शैक्षणिक पाठ्यक्रम से 'धर्म' विषय हटा दिया गया। ग्रामों एवं नगरों में जनशिक्षा प्राथमिक शिक्षा, उसके बाद माध्यमिक शिक्षा अनिवार्य हो गई। उच्च शिक्षण संस्थाएँ 91 से बढ़कर 12,000 हो गई। मुफ्त शिक्षा (कमजोर वर्गों के लिए) एवं छात्रवृत्ति की व्यवस्था की गई। इसी के फलस्वरूप शिक्षा क्षेत्र में प्रगति करते हुए रूस ने अन्य यूरोपीय राष्ट्रों को पीछे छोड़ दिया। साहित्य, कला, संगीत, रेडियो एवं सिनेमा के माध्यम से नवीन संस्कृति का विकास हुआ।

(iii) बाह्य प्रभाव (विश्व पर प्रभाव) :-
- पूरे विश्व में, साम्यवादी सरकार की सफलता ने छाप छोड़ी एवं समाजवादी एवं मार्क्सवादी विचारधारा की लोकप्रियता बढ़ने लगी पुनः नवोदित राष्ट्र पोलैण्ड, चीन, क्यूबा, पू. जर्मनी आदि में समाजवाद की स्थापना हुई जिसे रूस ने प्रोत्साहन दिया।
- पूंजीवादी राष्ट्रों ने विरोध शुरु कर दिया

❖ स्टालिन :- लेनिन के मृत्यु उपरांत सत्ता में आया
- व्यापक औद्योगीकरण का समर्थक
- कड़ाई से कृषि क्षेत्र में सामूहिकीकरण किया
- पंचवर्षीय योजनाएं लागू की –
  - 1st => (1928-1933) :- रूस में यूरोप का सबसे बड़ा हाइड्रो इलेक्ट्रिक स्टेशन
    - ट्रैक्टर फैक्ट्री लगाई
  - 2nd -> औद्योगिक क्षेत्रों को रेलवे मार्ग से जोड़ा

Scanned by CamScanner

Date: __/__/__

3^{rd} ⇒ (1938) ⇒ युद्धक शस्त्रों के निर्माण पर बल

परिणाम :- रूस में भारी उद्योगों का विकास हुआ। 1928-41 के बीच इस्पात एवं कोयले में क्रमशः चार गुनी एवं 6 गुनी वृद्धि हुई।
भारी वाहनों के निर्माण में दूसरा स्थान प्राप्त कर लिया।
ये सभी कार्य बिना विदेशी सहायता के किए गये।
स्टालिन के प्रयासों के फलस्वरूप ही सोवियत रूस ने जर्मनी का सफलतापूर्वक सामना WW-II में किया।

⊛ औपनिवेशवाद (Colonialism) V/S साम्राज्यवाद ⊛

⇒ औपनिवेशवाद : तीन तरह के हैं :-

(i) Settler :- मूल निवासियों को विस्थापित कर खुद स्थापित
(Ex :- अमेरिका)

(ii) Dependent (निर्भरक) :- इस में कब्जा किया गया -
(Ex :- India & China)

(iii) Plantation :- देशों को गुलाम कर, यूरोप में गुलामों को बेचना
(Ex :- जमैका, बारबाडोस आदि)

⇒ साम्राज्यवाद :- किसी देश की पूंजी पर पूरे तरह से कब्जा एवं उपभोग

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date :

विश्वयुद्ध - I (WW-I)

- विश्वयुद्ध के कारण :- Copy / Book

- युद्ध का स्वरूप :- Copy / Book

WW-I के परिणाम :- (4 वर्ष, 3 माह, 11 दिन चला)

- 80 लाख मरे एवं 2 करोड़ आहत हुए
- जनसंख्या के अनुपात में फ्रांस को अत्याधिक हानि हुई

तात्कालिक प्रभाव / परिणाम

(i) सामाज्यों का पतन :-

- जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी, तुर्की एवं रूस जैसे साम्राज्य ध्वस्त हुए एवं प्रजातंत्र की स्थापना की नींव संभव हुई
- विजयी राज्य, गणतंत्र थे अतः संपूर्ण विश्व में राजतंत्र के विरुद्ध हवा चली एवं प्रजातंत्र को नैतिक बल मिला फलस्वरूप, एशिया, अफ्रीका एवं दक्षिण अमेरिका में राष्ट्रवादी आंदोलन तेज हो गये।

(ii) रूसी क्रांति :- WW-I के फलस्वरूप हुई थी जिससे पहली बार शोषणविहीन समाज की स्थापना हुई।

इसका प्रभाव पूर्वी देशों पर सबसे ज्यादा पड़ा

(iii) महाशक्ति के रूप में अमेरिका का अभ्युदय :-

पेरिस शांति सम्मेलन में अमेरिका की महत्वपूर्ण भूमिका थी अतः पहली बार यूरोप से बाहर के देश को महत्व दिया गया जबकि पहले (WW-I से) यूरोपीय देश सभी को तुच्छ मानते थे।

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

(iv) राष्ट्रसंघ की स्थापना
(v) आर्थिक प्रभाव:- वस्तुएं की कीमते बढ़ी, मजदूरी दर बढ़ी, मुद्रास्फीति बढ़ गई। (कारण:- 1914 में दोनों गुटो का कुल कर्ज 8 हजार करोड़ था जो 1918 में बढ़कर 50,000 करोड़ हो गया)

दूरगामी प्रभाव:-

(i) व्यापार:- राष्ट्रों ने करों में वृद्धि की जिससे विश्व व्यापार कम हो गया।
युद्ध के बाद अमेरिका एवं जापान विश्व व्यापार पर हावी हो गये जहाँ पहले ब्रिटेन व जर्मनी थे।

(ii) श्रमिकों की स्थिति में परिवर्तन:- WW-I के बाद एक अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन स्थापित हुआ
समाजवादी क्रांति के फलस्वरूप दूरगामी परिणाम आए फलत: श्रमिकों के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ बनी जिससे मजदूरी में वृद्धि हो गई, बीमा व्यवस्था एवं उनकी सुरक्षा के उचित प्रबंध किए गए।

(iii) सैन्यशक्ति में वृद्धि:- WW-I के फलस्वरूप जहां एक ओर विजेता राष्ट्रों ने अपनी सुरक्षा के लिए सैन्य शक्ति बढ़ाई वहीं दूसरी ओर हारे हुए देशों ने, विजेता राष्ट्रों के समकक्ष लाने के लिए अपनी शक्ति बढ़ाई।

(iv) तानाशाही विचारधारा का विकास:- जर्मनी में हिटलर, इटली में मुसोलिनी जैसे तानाशाहों का उदय जबकि जापान में सैनिकवाद पनपा

(v) वैमनस्यता की भावना का उदय:- फ्रांस-जर्मनी के बीच आलसेस-लॉरेन प्रदेश को लेकर तनाव बढ़ा। सेव्रे की संधि से तुर्की असंतुष्ट था फ्रांस-ब्रिटेन के बीच ट्यूनीशिया एवं मोरक्को के अधिपत्य को लेकर विवाद हुआ

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date :

पेरिस सम्मेलन एवं शांति संधियाँ

- अध्यक्ष क्लीमेंशु को चुना जबकि राष्ट्रपति विल्सन (अमे.), PM आर्लैण्डो (इटली), लायड जॉर्ज (ब्रिटेन) अपने ग्रहकार्यों से शामिल न हो सके। होकर शामिल हुए।
- महाशक्ति रूस को बाहर रखा [समाजवादी विचारधारा के चलते]
- जर्मनी, आस्ट्रिया को बाहर रखा गया
- जापान - इटली शामिल हुए परन्तु भूमिका नगण्य रही
- वुडरो विल्सन :- 14 सिद्धांत दिए -
  - 14 वां → राष्ट्रसंघ के उपबंध
- लॉयड जार्ज :- जर्मनी से मध्यम समझौते का पक्षधर था क्योंकि फ्रांस उसका राजनैतिक हित एवं व्यापार के प्रतिकूल था जबकि रूस के साम्यवाद के विरुद्ध जर्मनी को खड़ा करना चाहता था।
- क्लीमेंशु (फ्रांस) :- जर्मनी का पूर्णत: दमन का पक्षधर।
  - इसी की मांगे सबसे ज्यादा स्वीकार की गई
- आरलेण्डो क्षुब्ध होकर वापस गया
- सेव्र संधि :- तुर्की से [कुस्तुंतुनिया तक सीमित किया गया] साम्राज्य खत्म जो एशिया माइनर प्रायद्वीप से शुरू हुआ
- नइजी की संधि :- बुल्गारिया के साथ, जिसमें उसके कुछ क्षेत्र रूमानिया को दिया एवं सेना 20,000 तक सीमित
- ट्रियानों की संधि :- हंगरी के साथ, जिसमें नया राष्ट्र चेकोस्लोवाकिया बनाया गया एवं समुद्रतटविहीन
- सें जरमैं की संधि :- ऑस्ट्रिया के साथ जिसमें हंगरी को अलग कर दिया गया, सेना 30,000 तक सीमित एवं नौसेना व वायुसेना रखने की मनाही।

Scanned by CamScanner

Page :
Date :

⇒ वर्साय की संधि :- (जर्मनी के साथ)

↳ WW-I का मुख्य युद्ध अपराधी माना गया एवं उससे सब कुछ वसूलने का प्रावधान रखा गया जिसमें 5 प्रावधान थे – प्रादेशिक, आर्थिक, निशस्त्रीकरण, राष्ट्रसंघ, युद्ध अपराध

→ प्रमुख शर्तें :- (1) क्षतिपूर्ति हेतु 6.5 अरब पौण्ड का जुर्माना

(2) स्वतंत्र पोलैण्ड की स्थापना व समुद्रतट जाने हेतु गलियारे की व्यवस्था

(3) फिनलैण्ड, यूगोस्लाविया स्वतंत्र राष्ट्र बने

(4) एस्टोनिया, लाटविया, लिथुआनिया नामक देशों का निर्माण

(5) अल्सास लॉरेन क्षेत्र फ्रांस को वापस

(6) इंग्लैण्ड को उसके उपनिवेश (अफ्रीका) वापस

(7) उपनिवेशों में केवल अरब को स्वतंत्रता

→ एकतरफा थोपी हुई संधि थी जो नाजीवाद उदय का आधार बनी

⊛ ब्रिटिश तुष्टीकरण की नीति ⊛

आधार :-

(i) साम्यवाद तथा साम्यवादी रूस से खतरा :- ब्रिटेन के लिए साम्यवाद का खतरा अन्य राष्ट्रों से ज्यादा था क्योंकि उसके सबसे ज्यादा उपनिवेश थे एवं सबसे बड़ा पूंजीपति वर्ग था।

ब्रिटेन प्रत्येक उस राष्ट्र को मदद देने को तैयार था जो साम्यवाद का विरोधी हो। इसी के तहत जर्मनी, इटली एवं जापान को प्रत्यक्ष सहायता देता रहा। एवं उनके द्वारा किए गए कई संधि उल्लंघनों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी

(ii) शक्ति संतुलन का सिद्धांत :- ब्रिटेन सदैव यूरोप में अपने समकक्ष किसी अन्य शक्ति को उभरने से रोकने में प्रयासरत रहा

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Date: __/__/__

जैसे:- नेपोलियन के समय, रूस की सहायता। जर्मनी के विरुद्ध WW-I के समय, रूस एवं फ्रांस की सहायता। एवं WW-II के समय, फासिस्ट त्रिगुट के विरुद्ध सहायता।

इस प्रकार शक्ति संतुलन का उसका परम्परागत विचार, उसकी तुष्टीकरण की नवीन नीति का मुख्य प्रेरक विचार बन गया

(iii) ब्रिटिश-फ्रेंच विवाद:- वास्तव में यदि इन दोनों में एकता होती तब शायद WW-II से बचा जा सकता था एवं राष्ट्रसंघ काफी मजबूत हो पाता

(iv) ब्रिटिश नेताओं की अक्षमता:- इस दौरान बागडोर अनुभवहीन एवं कट्टर साम्यवाद विरोधी व्यक्तियों के हाथ में थी। अतः वे तुष्टीकरण नीति को बढ़ाते रहे

⇒ परिणाम:- (1) WW-II का आधार बना
(2) फासीवाद व नाजीवाद के उदय का आधार बना
(3) हिटलर को यूरोप विजय का अवसर मिला
(4) साम्यवाद के प्रसार में मदद मिली क्योंकि WW-II के बाद रूस महाशक्ति बनकर उभरा
(5) राष्ट्रसंघ को दफना दिया क्योंकि इसने राष्ट्रसंघ के सिद्धांतों का पूर्ण परित्याग किया
(6) इसे ब्रिटिश इतिहास की एक लज्जाजनक घटना कहा जा सकता है।

Qu:- दो महायुद्धों के बीच लोकतंत्र का पतन ?

search "MPPSC & PEB(VYAPAM)

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date :

(*) लोकार्नो समझौता :- 1925 में स्विटजरलैण्ड में
- यूरोप में शांति हेतु जर्मनी एवं फ्रांस के बीच समझौता
- कुल 5 संधियाँ हुई
- अन्य देश शामिल → इंग्लैण्ड, इटली, पोलैण्ड, बेल्जियम, चेकोस्लोवाकिया
- जर्मनी को राष्ट्रसंघ का सदस्य स्वीकारा गया
- फ्रांस जहां इसे एंग्लो-फ्रेंच संधि का पुष्टी पुनर्जीवन मानता था वहीं ब्रिटेन इसे शक्ति संतुलन समझता था
- रूस को इसमें शामिल नहीं किया गया
- असफलता के बाद भी इसे यूरोप पुनर्निर्माण में मुख्य घटक माना गया
- चर्चिल के अनुसार ये "यूरोप पुनर्निर्माण की चरम सीमा" है।

(*) राष्ट्रसंघ (League of Nation) (*) (Copy / BOOK)

(1) आधार
(2) उद्देश्य (3) लीग के अंग (4) असफलता के कारण

(*) फांसीवाद एवं मुसोलिनी (*) (Copy / BOOK)

(*) मुसोलिनी के पतन के कारण (*)

(1) हिटलर के साथ उसके संबंधों से इटली की जनता में काफी रोष बढ़ गया। फलस्वरूप 1943 ई. में इटली के राजा एवं ग्रांड असेंबली ने मुसोलिनी को सत्ताच्युत कर दिया।
(2) नाजीदल के समान फासीदल संगठित नहीं था
(3) मुसोलिनी को एक वैकल्पिक नेतृत्व की उपस्थिति से अनवरत खतरा था अंततः राजा विक्टर इमैन्युल - III विरोधियों के लिए एकता का केंद्र बन गया।
(4) हिटलर के समान उसके पास सैनिक नियंत्रण एवं गुप्तचर संस्था का अभाव था।

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Date : __/__/__

(*) नाजीवाद एवं हिटलर का उदय (*) (Copy / Book)

(*) स्पेन का गृहयुद्ध (1931) → (Copy / Book)

(*) विश्वयुद्ध II (WW-II) (*)

→ कारण :- (Copy / Book)
- → वर्साय संधि
- → ब्रिटेन का तुष्टीकरण
- → राष्ट्रसंघ की असफलता
- → 1929 की महामंदी
- → फासिस्ट शक्तियों का उदय
- → शस्त्रीकरण की होड़

→ युद्ध का स्वरूप :- (Copy / Book)

(*) द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रभाव :- यह युद्ध 6 वर्षों तक चलता रहा। जिसका प्रभाव भयानक एवं विनाशकारी था।

इस युद्ध के साथ ही यूरोपियन युग का अंत हो गया एवं महाशक्ति गुरुत्व दो परस्पर विरोधी केंद्रों मास्को एवं वाशिंगटन में स्थानांतरित हो गया।

(1) सामाजिक प्रभाव :- समाज में राष्ट्रीयता की भावना क्षीण होने लगी थी। एवं समाज दो लोकतांत्रिक प्रणाली - साम्यवाद एवं लोकतंत्रवाद (पूँजीवाद) प्रणाली में बँट गया।

राष्ट्रभक्ति, देशप्रेम पर मरने की भावना का स्थान अब विचारधारा हेतु लड़ने की भावना ने ले लिया।

पूर्वी यूरोप → साम्यवादी विचारधारा
पश्चिमी यूरोप → लोकतंत्रवादी — " —
(संसदीय प्रजातांत्रिक)

Scanned by CamScanner

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"
(V.S. Education) 9981770371

Page :
Date : / /

(2) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास की शुरुआत :-

वैज्ञानिक प्रगति ने नये आयाम ग्रहण कर लिये। परिणामत: भाषा, धर्म एवं संस्कृति के कारण जो भेद थे, उनका महत्व इस उन्नति के कारण कम हो गया।

WW-II के समय से जो विकास शुरु हुआ था वह आज तक जारी है एवं भविष्य में बढ़ता ही जाएगा।

(3) नवसाम्राज्यवाद या नवउपनिवेशवाद का उदय :-

WW-II के पहले तक लगभग हर देश अपनी अर्थव्यवस्था को उन्मुक्त रखने की जगह दुपाय रखना चाहता था जिससे विकास की गति अवरूद्ध हो गई थी। WW-II के बाद इस भावना का अंत हुआ क्योंकि देशों को समझ आया कि विश्वव्यापार एवं तकनीकी संधियों से ही विकास संभव है क्योंकि एक अर्थव्यवस्था दूसरी अर्थव्यवस्था से कहीं न कहीं जुड़ी हुई है।

(4) एशिया - अफ्रीका के देशों को उपनिवेशवाद से स्वतंत्रता देने की शुरुआत हुई। जिसका आह्वान रूजवेल्ट (अमेरिकी राष्ट्रपति) ने किया। (अटलांटिक चार्टर की घोषणा)

इसी के परिणामस्वरूप ब्रिटेन, फ्रांस, डच सभी के औपनिवेशिक साम्राज्य का अंत हो गया।

इतिहासकार टायनवी ने इसे 'अणुबम से अधिक विस्फोटक' कहा है।

(5) इस युद्ध से शक्ति संतुलन की अवधारणा समाप्त हो गई क्योंकि परमाणुशक्ति के आगे शक्तिसंतुलन कुछ भी नहीं था क्योंकि अब छोटी सी गलतफहमी या दुर्घटना संपूर्ण विश्व के विनाश का कारण बन सकती थी। अत: अब लोग युद्ध का सहारा लेने से बचने लगे।

Scanned by CamScanner

Page :
Date :

(6) शीतयुद्ध की शुरुआत

(7) संयुक्त राष्ट्रसंघ का गठन

शीतयुद्ध :-

- WW-II के 1 वर्ष बाद 1946 में ही मित्र राष्ट्र दो गुटों में बंट गये जिसका प्रमुख कारण अमेरिका द्वारा अपने परमाणु बम कार्यक्रम को दुबारा रखना था इसी कारण सोवियत संघ के नेतृत्व में सुरक्षा एवं अस्तित्व संबंधी चिंताओं का जन्म हुआ
- 1949 में USSR के द्वारा परमाणु क्षमता हासिल करने के बाद गुटीय विभाजन तीव्र होता गया।
- फ्लेमिंग ने इसे "मानव मस्तिष्कों का युद्ध" कहा
  अमेरिकी राजनीतिज्ञ डलेस ने इसे 'नैतिक युद्ध' कहा
  जवाहरलाल नेहरू ने इसे 'स्नायु युद्ध' की संज्ञा दी
- उत्तरदायी कौन ? तीन तरह के विचारकों की अलग-2 राय है-
  - परंपरागत विचारक :- रूस को दोषी मानते हैं। इसके लिए तर्क दिया गया कि WW-II के बाद USSR ने पूर्वी यूरोपीय देशों में अपनी विचारधारा का प्रसार किया था परिणामस्वरूप अमेरिका को इसे रोकने की रणनीति चुननी पड़ी
  - पुनर्विचारक :- जिसमें कई अमेरिकी विचारक हैं जिनका मत है
    - सोवियत का कदम अपनी रक्षा एवं अमेरिका की पूर्व प्रबल कूटनीति का विरोध था क्योंकि अमेरिका 1917 से रूस की राजनीति में दखल दे रहा था
  - उत्तर पुनर्विचारक :- इसके विचारक बिना किसी को जिम्मेदार ठहराए परिस्थितियों की पड़ताल करते हैं। जिसमें अमेरिकी नीतियाँ कुछ ज्यादा आक्रामक लगती हैं-

Scanned by CamScanner

Page :
Date : / /

रूसी गुट → पोलेण्ड, बुल्गारिया, रूमानिया, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया

अमेरिकी गुट ⇒ ब्रिटेन, फ्रांस, कनाडा, इटली, ग्रीस, तुर्की, पाक आस्ट्रेलिया, नीदरलैण्ड, बेल्जियम

(*) संयुक्त राष्ट्र संघ :- (Copy / Book)

(*) एशियाई शक्तियों का उदय :- जापान एवं चीन
(Copy / Book)

Scanned by CamScanner

NGO विक्रम सर्वशिक्षा समिति (V.S. Education) एवं Avyan School of IAS

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

MPPSC MAINS 2019

ONLINE & OFFLINE TEST

TEST SERIES SCHEDULE

SR. NO.	DATE	DAY	PAPER
1	30-10-2022	SUNDAY	PAPER-I, PART-A
2	06-11-2022	SUNDAY	PAPER-I, PART-B
3	13-11-2022	SUNDAY	PAPER-II, PART-A
4	20-11-2022	SUNDAY	PAPER-II, PART-B
5	27-11-2022	SUNDAY	PAPER-III, PART-A
6	04-12-2022	SUNDAY	PAPER-III, PART-B
7	11-12-2022	SUNDAY	PAPER-IV, FLT
8	18-12-2022	SUNDAY	PAPER-V, FLT
9	25-12-2022	SUNDAY	PAPER-VI, FLT
10	27-12-2022	TUESDAY	PAPER-I, FLT
11	30-12-2022	FRIDAY	PAPER-II, FLT
12	02-01-2023	MONDAY	PAPER-III, FLT
13	04-01-2023	WEDNESDAY	PAPER-IV, FLT
14	06-01-2023	FRIDAY	PAPER-V, FLT
15	08-01-2023	SUNDAY	PAPER-VI, FLT

Fee: Rs.1500/- Only

आयोजन स्थल

Address : Plat No. 132, Top Floor, M.P. Nagar Zone-II, Bhopal

Call : 8109193070, 9329760669

"विक्रम सर्वशिक्षा समिति"

(V.S. Education) द्वारा आयोजित

MPPSC 2022 (प्रीलिम्स)

मेगा टेस्ट सीरीज

प्रसिद्ध मेंटर्स के मार्गदर्शन में आयोजित MPPSC प्रीलिम्स की विश्वसनीय टेस्ट सीरीज

प्रश्न पत्र निर्माता (Question Maker Team)

- हर्ष सिंह सर (IAS-2015 बैच) (मेंटर – AVYAN SCHOOL OF IAS)
- बी.बी. अग्निहोत्री सर (डिप्टी कमिश्नर - मध्य प्रदेश शासन) (मेंटर- अग्निहोत्री क्लासेस)
- संतोष टैगोर सर (अपर कलेक्टर – मध्य प्रदेश शासन) (मेंटर- भारत IAS एकेडमी)
- अमित सिंह सर (संयुक्त कलेक्टर – मध्य प्रदेश शासन)
- धर्मेन्द्र तिवारी सर (असि. प्रोफ़ेसर – मध्य प्रदेश शासन)
- Dr. सत्येन्द्र सिंह सर (PG & PHD - JNU दिल्ली) (असि. प्रोफ़ेसर – मध्य प्रदेश शासन)
- विक्रम सिंह सर (FCI – भारत सरकार)
- प्रवीण साहू सर (परीक्षा धाम)
- विक्रम सिंह सर (विक्रम सर्व शिक्षा समिति)
- राजीव सिंह सर (ALUMNI- दिल्ली वि. वि.) (Avyan School Of IAS)
- राम सर (राम एकेडमी – जबलपुर)
- आलोक दुबे सर (MPPSC - सीनियर मेंटर)
- सचिन दुबे सर (सीनियर MPPSC मेंटर) (दीक्षा आईएएस)
- Dr. विकास विजयवर्गीय सर (भारत IAS एकेडमी)
- यतीश अग्निहोत्री सर (मेंटर -अग्निहोत्री क्लासेज)
- शैलेंद्र यादव सर (PHD कंप्यूटर साइंस)(लेखक: ICT)
- धर्मवीर विश्नोई सर (लेखक- मैग्राहिल पब्लि. एवं Exam Pedia पब्लिकेशन)

मध्य प्रदेश की एक मात्र टेस्ट सीरीज जिसमें प्रत्येक पेपर बनाने वाले मेंटर का नाम प्रत्यक्ष रूप से दर्शाया जाता है।

भाषा : हिंदी & अंग्रेजी

Attention !!

1. ऑनलाइन या ऑफलाइन टेस्ट सीरीज के लिए न्यूनतम व्यवस्था शुल्क रखा गया है। जो NGO के साथ अनुबंधित संस्थान की निर्धारित सीटें भरने तक लागू रहेगा। (टाइपिंग, पोर्टल, अपलोडिंग आदि)
2. सभी सेण्टर में पेपर सामान रहेंगे और कंबाइंड रिजल्ट जारी किया जायेगा।
3. विस्तृत टाइम टेबल ऑफलाइन संस्थान से या मोबाईल एप्प से प्राप्त करें।
4. इस बार मॉडल आंसर हिंदी के साथ अंग्रेजी भाषा में भी दिए जायेंगे।

- 10 Unit Wise Test
- 7 FLT GS (Paper-1)
- 3 CSAT (Paper-2)

4 दिसम्बर 2022

OFFICIAL
VS Education
गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करे
GET IT ON Google Play
Chat with us on WhatsApp
9981770371
Laptop एवं PC वर्जन भी उपलब्ध ➜ vseducation.in

दोनों विश्वयुद्ध महत्वपूर्ण टॉपिक है अतः इनको डिटेल में पढ़ें

प्रथम विश्व युद्ध

- **28 जुलाई, 1914 से 11 नवंबर, 1918 तक चले प्रथम विश्व युद्ध (WW I) को 'महान युद्ध' के नाम से भी जाना जाता है।**
- **प्रथम विश्व युद्ध केंद्रीय शक्तियों और मित्र देशों के मध्य लड़ा गया था।**
- **मित्र देशों में फ्राँस, रूस और ब्रिटेन जैसे शक्तिशाली देश शामिल थे। वर्ष 1917 के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका भी (मित्र देशों की ओर से) युद्ध में शामिल हो गया था।**
- **केंद्रीय शक्तियों में शामिल प्रमुख** देशों में जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी, ऑटोमन साम्राज्य और बुल्गारिया आदि देश थे।

युद्ध के कारण

जर्मनी की नई अंतर्राष्ट्रीय विस्तारवादी नीति: वर्ष 1890 में जर्मनी के नए सम्राट विल्हेम द्वितीय ने एक अंतर्राष्ट्रीय नीति शुरू की, जिसने जर्मनी को विश्व शक्ति के रूप में परिवर्तित करने के प्रयास किये। इसी का परिणाम रहा कि विश्व के अन्य देशों ने जर्मनी को एक उभरते हुए खतरे के रूप में देखा जिसके चलते अंतर्राष्ट्रीय स्थिति अस्थिर हो गई।

परस्पर रक्षा सहयोग (Mutual Defense Alliances): संपूर्ण यूरोपियन राष्ट्रों ने आपसी सहयोग के लिये रक्षा समझौते और संधियाँ कर ली। इन संधियों का सीधा सा अर्थ था कि यदि यूरोप के किसी एक राष्ट्र पर शत्रु राष्ट्र की ओर से हमला होता है तो उक्त राष्ट्र की रक्षा हेतु सहयोगी राष्ट्रों को सहायता के लिये आगे आना होगा।

- त्रिपक्षीय संधि (Triple Alliance), वर्ष 1882 की यह संधि जर्मनी को ऑस्ट्रिया-हंगरी और इटली से जोड़ती है।
- त्रिपक्षीय सौहार्द (Triple Entente), यह ब्रिटेन, फ्राँस और रूस से संबद्ध था, जो वर्ष 1907 तक समाप्त हो गया।

इस प्रकार यूरोप में दो प्रतिद्वंद्वी समूह बन गए।

साम्राज्यवाद (Imperialism): प्रथम विश्व युद्ध से पहले अफ्रीका और एशिया के कुछ हिस्से कच्चे माल की उपलब्धता के कारण यूरोपीय देशों के बीच विवाद का विषय बने हुए थे। जब जर्मनी और इटली इस उपनिवेशवादी दौड़ में शामिल हुए तो उनके विस्तार के लिये बहुत कम संभावना बची। इसका परिणाम यह हुआ कि इन देशों ने उपनिवेशवादी विस्तार की एक नई नीति अपनाई। यह नीति थी दूसरे राष्ट्रों के उपनिवेशों पर बलपूर्वक अधिकार कर अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया जाए। बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा और अधिक साम्राज्यों की इच्छा के कारण यूरोपीय देशों के मध्य टकराव में वृद्धि हुई जिसने समस्त विश्व को प्रथम विश्व युद्ध में धकेलने में मदद की।

- इसी प्रकार मोरक्को तथा बोस्निया संकट ने भी इंग्लैंड एवं जर्मनी के बीच प्रतिस्पर्द्धा को और बढ़ावा दिया।
- अपने प्रभाव क्षेत्र में वृद्धि करने के उद्देश्य से जर्मनी ने जब बर्लिन-बगदाद रेल मार्ग योजना बनाई तो इंग्लैंड के साथ-साथ फ्राँस और रूस ने इसका विरोध किया, जिसके चलते इनके बीच कटुता मेंऔर अधिक वृद्धि हुई।

सैन्यवाद (Militarism): 20वीं सदी में प्रवेश करते ही विश्व में हथियारों की दौड़ शुरू हो गई थी। वर्ष 1914 तक जर्मनी में सैन्य निर्माण में सबसे अधिक वृद्धि हुई। ग्रेट ब्रिटेन और जर्मनी दोनों ने इस समयावधि में अपनी नौ-सेनाओं में काफी वृद्धि की। सैन्यवाद की दिशा में हुई इस वृद्धि ने युद्ध में शामिल देशों को और आगे बढ़ने में मदद की।

वर्ष 1911 में आंग्ल जर्मन नाविक प्रतिस्पर्द्धा के परिणामस्वरूप 'अगादिर का संकट' उत्पन्न हो गया। हालाँकि इसे सुलझाने का प्रयास किया गया परंतु यह प्रयास सफल नहीं हो सका। वर्ष 1912 में जर्मनी में एक विशाल जहाज़ 'इम्प रेटर' का निर्माण किया गया जो उस समय का सबसे बड़ा जहाज़ था। इससे इंग्लैंड और जर्मनी के मध्य वैमनस्य एवं प्रतिस्पर्द्धा में वृद्धि हुई।

राष्ट्रवाद (Nationalism): जर्मनी और इटली का एकीकरण भी राष्ट्रवाद के आधार पर ही किया गया था। बाल्कन क्षेत्र में राष्ट्रवाद की भावना अधिक प्रबल थी। चूँकि उस समय बाल्कन प्रदेश तुर्की साम्राज्य के अंतर्गत आता था, अतः जब तुर्की साम्राज्य कमज़ोर पड़ने लगा तो इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों ने स्वतंत्रता की मांग शुरू कर दी।

बोस्निया और हर्जेगोविना में रहने वाले स्लाविक लोग ऑस्ट्रिया-हंगरी का हिस्सा नहीं बना रहना चाहते थे, बल्कि वे सर्बिया में शामिल होना चाहते थे और बहुत हद तक उनकी इसी इच्छा के परिणामस्वरूप प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत हुई। इस तरह राष्ट्रवाद युद्ध का कारण बना।

रूस का मानना था कि स्लाव यदि ऑस्ट्रिया-हंगरी एवं तुर्की से स्वतंत्र हो जाता है तो वह उसके प्रभाव में आ जाएगा, यही कारण रहा कि रूस ने अखिल स्लाव अथवा सर्वस्लाववाद आंदोलन को बल दिया। स्पष्ट है कि इससे रूस और ऑस्ट्रिया–हंगरी के मध्य संबंधों में कटुता आई।

इसी तरह के और भी बहुत से उदाहरण रहे जिन्होंने राष्ट्रवाद की भावना को उग्र बनाते हुए संबंधों को तनावपूर्ण स्थिति में ला खड़ा किया। ऐसा ही एक उदाहरण है सर्वजर्मन आंदोलन।

किसी प्रभावशाली अंतर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव

प्रथम विश्व युद्ध के पूर्व ऐसी कोई संस्था मौजूद नहीं थी जो साम्राज्यवाद, सैन्यवाद और उग्र राष्ट्रवाद पर नियंत्रण कर विभिन्न राष्ट्रों के बीच संबंधों को सहज बनाने में सहायता कर सके। उस समय विश्व का लगभग प्रत्येक राष्ट्र अपनी मनमानी कर रहा था जिसके चलते यूरोप की राजनीति में एक प्रकार की अराजक स्थिति बन गई।

तत्कालीन कारण 'आर्कड्यूक फ्रांज फर्डिनेंड (Archduke Franz Ferdinand) की हत्या' : जून 1914 में जब ऑस्ट्रिया-हंगरी के सिंहासन के उत्तराधिकारी आर्कड्यूक फ्रांज फर्डिनेंड बोस्निया में साराजेवो का दौरा कर रहे थे, तब उनकी गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। एक सर्बियाई व्यक्ति जिसका यह सोचना था कि ऑस्ट्रिया के बजाय सर्बिया को बोस्निया पर नियंत्रण करना चाहिये, ने आर्कड्यूक की हत्या कर दी। इससे सारा यूरोप सकते में आ गया। ऑस्ट्रिया ने इस घटना के लिये सर्बिया को उत्तरदायी माना। ऑस्ट्रिया ने सर्बिया को चेतावनी दी कि वह 48 घंटे के अंदर इस घटना के संदर्भ में अपनी स्थिति स्पष्ट कर अपराधियों का दमन करे। लेकिन सर्बिया ने ऑस्ट्रिया की मांग को ठुकरा दिया। परिणामस्वरूप 28 जुलाई, 1914 को ऑस्ट्रिया ने सर्बिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। देखते-ही-देखते विश्व के अन्य राष्ट्र भी अपने-अपने गुटों के समर्थन में उतर आए और युद्ध विकराल होता चला गया। नतीजतन:

- इस युद्ध में रूस भी शामिल हो गया क्योंकि उसने सर्बिया के साथ संधि कर रखी थी।
- इसके बाद जर्मनी ने रूस के साथ युद्ध की घोषणा कर दी क्योंकि जर्मनी और ऑस्ट्रिया-हंगरी के मध्य संधि हुई थी।
- इसके बाद ब्रिटेन ने जर्मनी के साथ युद्ध की घोषणा कर दी क्योंकि जर्मनी ने तटस्थ बेल्जियम पर आक्रमण कर दिया था, जबकि ब्रिटेन ने बेल्जियम और फ्राँस दोनों देशों की रक्षा के लिये समझौते किये हुए थे।

युद्ध के दौरान हुए कुछ प्रमुख युद्धों में मार्ने का प्रथम युद्ध, सोम्मे का युद्ध, टैनबर्ग का युद्ध, गैलीपोली का युद्ध और वर्दुन का युद्ध आदि शामिल थे।

युद्ध के चरण

- यूरोप, अफ्रीका और एशिया में कई मोर्चों पर संघर्ष शुरू हुआ। इसके दो मुख्य परिदृश्य थे जिसमें एक था पश्चिमी मोर्चा; जहाँ जर्मनों ने ब्रिटेन, फ्राँस और वर्ष 1917 के बाद अमेरिकियों के साथ संघर्ष किया। दूसरा मोर्चा पूर्वी मोर्चा था जिसमें रूसियों ने जर्मनी और ऑस्ट्रो-हंगेरियन सेनाओं के खिलाफ युद्ध लड़ा।
- वर्ष 1914 में थोड़े समय के लिये जर्मनी को युद्ध में बढ़त हासिल हुई, उसके बाद पश्चिमी मोर्चा स्थिर हो गया और एक लंबा तथा क्रूर युद्ध शुरू हो गया। इस बीच पूर्वी मोर्चे पर जर्मनी की स्थिति मज़बूत हो गई लेकिन निर्णायक रूप से ऐसा नहीं हुआ।
- वर्ष 1917 में दो घटनाएँ घटित हुईं जिन्होंने संपूर्ण युद्ध का रुख ही बदल दिया। सर्वप्रथम जहाँ एक ओर संयुक्त राज्य अमेरिका मित्र राष्ट्रों के बेड़े में शामिल हो गया, वहीं दूसरी ओर रूसी क्रांति के बाद रूस युद्ध से बाहर हो गया और उसने एक अलग शांति समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये।
- अंत में वर्ष 1918 में जर्मन आक्रमण के बाद मित्र देशों के पलटवार ने जर्मन सेना को निर्णायक वापसी हेतु मजबूर कर दिया। अक्तूबर-नवंबर 1918 में क्रमशः तुर्की और ऑस्ट्रिया ने आत्मसमर्पण कर दिया, जिससे जर्मनी अकेला पड़ गया। युद्ध में पराजय और आर्थिक संकट के कारण जर्मनी में विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो गई तथा जर्मन सम्राट कैज़र विलियम द्वितीय को गद्दी त्यागनी पड़ी। इसके बाद जर्मनी में वेमर गणतंत्र की स्थापना हुई, साथ ही नई सरकार ने 11 नवंबर, 1918 को युद्धविराम के घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किये और यह प्रलयंकारी प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हो गया।

युद्ध के लिये उत्तरदायी कौन था?

- युद्ध में सम्मिलित कोई भी देश युद्ध के लिये स्वयं को उत्तरदायी नहीं मानता था बल्कि वे यह दावा करते थे कि उन्होंने शांति व्यवस्था बनाए रखने की चेष्टा की लेकिन शत्रु राष्ट्र की नीतियों के कारण युद्ध हुआ। हालाँकि वर्साय संधि की एक धारा में जर्मनी और उसके सहयोगी राष्ट्रों को युद्ध के लिये उत्तरदायी माना गया किंतु यह मित्र राष्ट्रों का एक पक्षीय निर्णय था।
- वस्तुतः प्रथम विश्व युद्ध के लिये सभी राष्ट्र उत्तरदायी थे, सिर्फ जर्मनी ही इसके लिये जवाबदेह नहीं था। सर्बिया ने ऑस्ट्रिया की जायज़ मांगों को अस्वीकार कर युद्ध आरंभ करवा दिया तथा ऑस्ट्रिया द्वारा युद्ध की घोषणा किये जाने से रूस सैनिक कार्रवाई करने के लिये बाध्य हुआ।
- सर्बिया की समस्या को कूटनीतिक स्तर पर हल करने के बजाय रूस ने इसका समाधान सैनिक कार्यवाही द्वारा करने का निर्णय लिया। जर्मनी की मजबूरी यह थी कि वह अपने मित्र राष्ट्र ऑस्ट्रिया का साथ नहीं छोड़ सकता था, इसलिये रूस द्वारा सैनिक कार्यवाही आरंभ होने पर जर्मनी भी सैन्य कार्रवाई हेतु बाध्य हुआ।
- इंग्लैंड ने भी युद्ध की स्थिति को टालने के लिये कोई ठोस कदम नहीं उठाया। उसने अपने सहयोगी राष्ट्रों को भी युद्ध से अलग रहने की सलाह नहीं दी, फलतः दोनों गुटों के राष्ट्र युद्ध में सम्मिलित होते गए और एक छोटा युद्ध विश्व युद्ध में परिणत हो गया।
- इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध के लिये सभी राष्ट्र उत्तरदायी थे, इसके लिये किसी एक राष्ट्र को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है।

युद्ध के परिणाम

आर्थिक परिणाम: प्रथम विश्व युद्ध में भाग लेने वाले देशों का बहुत अधिक धन खर्च हुआ। जर्मनी और ग्रेट ब्रिटेन ने अपनी अर्थव्यवस्था से प्राप्त धन का लगभग 60% हिस्सा युद्ध में खर्च किया। देशों को करों को बढ़ाना पड़ा और अपने नागरिकों से धन भी उधार लेना पड़ा। उन्होंने हथियार खरीदने तथा युद्ध के लिये आवश्यक अन्य चीजों हेतु भी अपार धन व्यय किया। इस स्थिति ने युद्ध के बाद मुद्रास्फीति को जन्म दिया।

राजनीतिक परिणाम: प्रथम विश्व युद्ध ने चार राजतंत्रों को समाप्त कर दिया। रूस के सीज़र निकोलस द्वितीय, जर्मनी के कैसर विल्हेम, ऑस्ट्रिया के सम्राट चार्ल्स और ओटोमन साम्राज्य के सुल्तान को पद छोड़ना पड़ा।

- प्रथम विश्व युद्ध के बाद विश्व मानचित्र में परिवर्तन आया, साम्राज्यों के विघटन के साथ ही पोलैंड ,चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लाविया जैसे नए राष्ट्रों का उदय हुआ।
- ऑस्ट्रिया, जर्मनी, फ्राँस और रूस की सीमाएँ बदल गईं।
- बाल्टिक साम्राज्य, रूसी साम्राज्य से स्वतंत्र कर दिये गए।
- एशियाई और अफ्रीकी उपनिवेशों पर मित्र राष्ट्रों का अधिकार होने से वहाँ भी परिस्थिति बदली। इसी प्रकार जापान को भी अनेक नए क्षेत्र प्राप्त हुए। इराक को ब्रिटिश एवं सीरिया को फ्राँसीसी संरक्षण में रख दिया गया।
- फिलिस्तीन, इंग्लैंड को दे दिया गया।

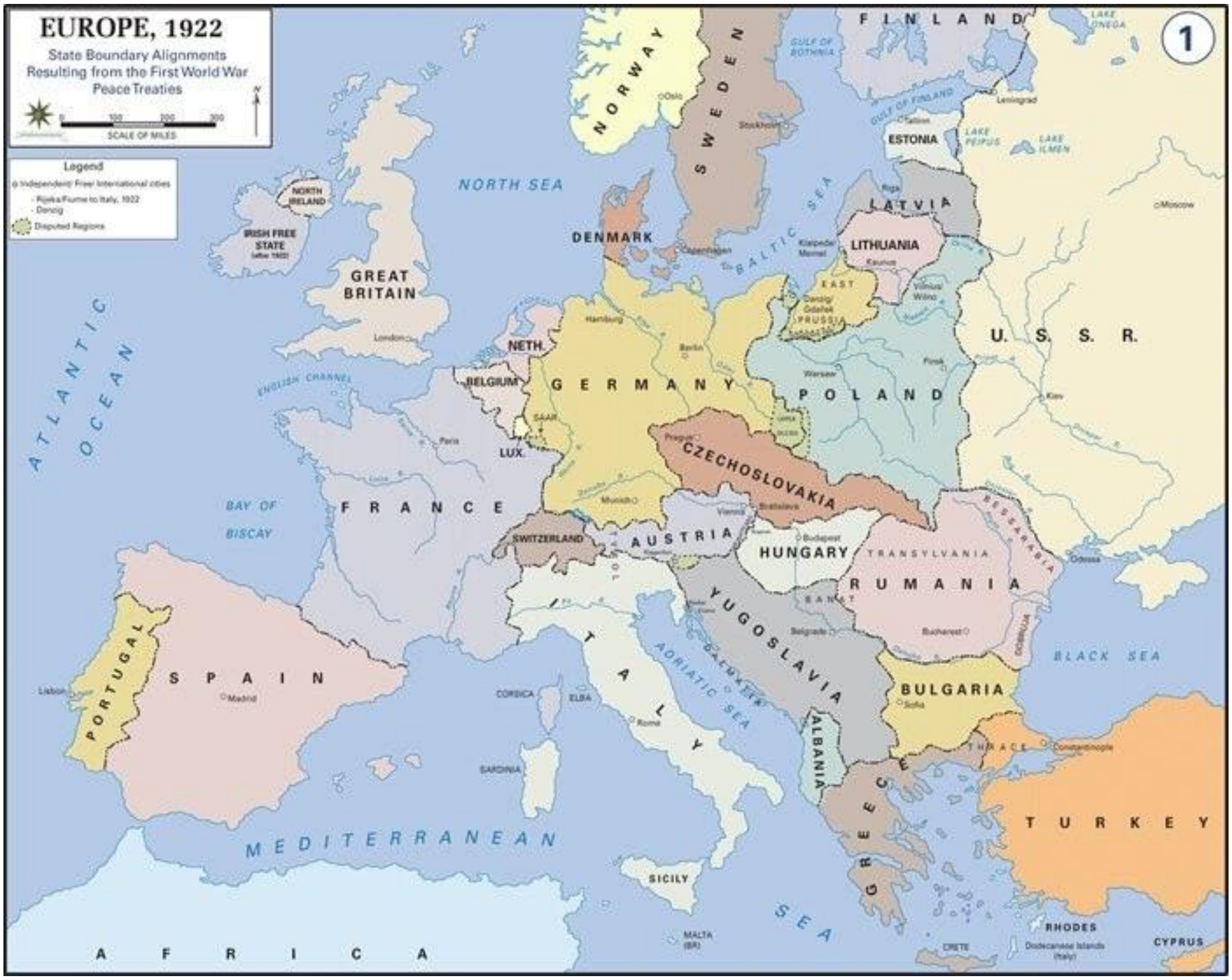

सामाजिक परिणाम: विश्व युद्ध ने समाज को पूरी तरह से बदल दिया। जन्म दर में गिरावट आई क्योंकि लाखों युवा मारे गए (आठ मिलियन लोग मारे गए), लाखों घायल हो गए तथा कई अन्य विधवा और अनाथ हो गए। नागरिकों ने अपनी ज़मीन खो दी और अन्य देशों की ओर प्रवास किया।

महिलाओं की भूमिका में भी परिवर्तन आ गया। उन्होंने कारखानों और दफ्तरों में पुरुषों का स्थान लिया।

उन्होंने कारखानों और कार्यालयों में पुरुषों की जगह लेने में एक प्रमुख भूमिका निभाई। कई देशों ने युद्ध समाप्त होने के बाद महिलाओं को अधिक अधिकार दिये जिसमें वोट देने का अधिकार भी शामिल था।

उच्च वर्गों ने समाज में अपनी अग्रणी भूमिका खो दी। युवा, मध्यम और निम्न वर्ग के पुरुषों तथा महिलाओं ने युद्ध के बाद अपने देश के पुनर्गठन की मांग की।

वर्सेल्स/वर्साय की संधि (Treaty of Versailles): 28 जून, 1919 को वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर के साथ प्रथम विश्व युद्ध आधिकारिक रूप से समाप्त हो गया। वर्साय की संधि दुनिया को दूसरे युद्ध में जाने से रोकने का प्रयास थी।

वर्सेल्स/वर्साय की संधि के कुछ प्रमुख बिंदु

यह संधि अलग-अलग खंडों में विभाजित थीं, जिनके अंदर कई धाराएँ शामिल थीं।

A. प्रादेशिक खंड:

- फ्राँस ने अल्सास और लोरेन को वापस पा लिया।
- यूपेन और माल्देमी बेल्जियम के हाथों में चले गए।
- पूर्वी क्षेत्रों को पोलैंड ने नष्ट कर दिया था जिससे पूर्वी प्रुशिया क्षेत्रीय रूप से अलग-थलग पड़ गया था।
- डेंटिग और मेमेल, पूर्व बाल्टिक जर्मन शहरों को मुक्त शहर घोषित किया गया था।
- डेनमार्क ने उत्तरी श्लेस्विग-होल्स्टीन पर कब्ज़ा कर लिया।
- जर्मनी ने अपने सभी उपनिवेश खो दिये और विजेता देशों ने उन्हें वापस ले लिया।

B. सैन्य खंड:

- जर्मन नौसेना पर कठोर प्रतिबंध।
- सेना की संख्या में नाटकीय कमी (केवल 100,000 सैनिकों की अनुमति तथा टैंक, विमान और भारी तोपखाने रखना निषेध किया गया।)
- राइनलैंड क्षेत्र का विसैन्यीकरण।

C. युद्ध सुधार:

इस संधि ने जर्मनी और उसके उन सहयोगियों को कुल 'हानि और क्षति' के लिये ज़िम्मेदार ठहराया, जो कि मित्र राष्ट्रों द्वारा पीड़ित थे और इसके परिणामस्वरूप उन्हें युद्ध के पुनर्मूल्यांकन के लिये मजबूर किया गया था।

अन्य संधियाँ

न्यूली की संधि (Newly Treaty) बुल्गारिया के साथ हस्ताक्षरित

छोटे बाल्कन देशों को बहुत अधिक क्षेत्रीय नुकसान हुआ तथा बुल्गारिया के अनेक क्षेत्र यूनान, युगोस्लाविया और रोमानिया को दे दिया गया।

सेवर्स की संधि (Sevres Treaty) तुर्की के साथ हस्ताक्षरित

सेवर्स की संधि बेहद कठिन थी और इसने तुर्की के राष्ट्रीय विद्रोह का नेतृत्व किया। इसके अंतर्गत ओटोमन साम्राज्य विखंडित कर दिया गया तथा इसके अनेक क्षेत्र यूनान और इटली को दे दिये गए। फ्राँस को सीरिया तथा पैलेस्तीन, इराक और ट्रांसजॉर्डन को ब्रिटिश मैंडेट के अंतर्गत कर दिया गया।

हालाँकि युद्ध के कारण कई अन्य महत्त्वपूर्ण सामाजिक और वैचारिक परिवर्तन भी देखे गए।

- अमेरिका, जिसने अपने क्षेत्र में संघर्ष का अनुभव किये बिना युद्ध जीत लिया था, पहली विश्व शक्ति बन गया।
- युद्ध में पुरुषों के संलग्न होने के कारण महिलाएँ कार्यबल में शामिल हुईं, जो महिलाओं के अधिकारों के लिये एक बड़ा कदम था।

- युद्ध के दौरान चरम राष्ट्रवाद का अनुभव किया गया, जिसने कम्युनिस्ट क्रांति का डर पैदा किया तथा कुछ देशों के मध्यम वर्ग की आबादी को चरम अधिकारों की मांग की ओर बढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया। इसने फासीवादी आंदोलनों के प्रति आकर्षण भी पैदा किया।
- राष्ट्र संघ का गठन: राष्ट्र संघ प्रथम विश्व युद्ध के बाद विकसित एक अंतर्राष्ट्रीय राजनयिक समूह था, जिसका गठन देशों के बीच विवादों को सुलझाने के लिये किया गया।

WW I और भारत

भारत के लिये प्रथम विश्वयुद्ध का महत्त्व

- चूँकि इस युद्ध में ब्रिटेन भी शामिल था और उन दिनों भारत पर ब्रिटेन का शासन था, अतः इस कारण हमारे सैनिकों को इस युद्ध में शामिल होना पड़ा।
- इसके अतिरिक्त उस समय भारतीय राष्ट्रवाद के प्रभुत्व का दौर था, राष्ट्रवादी यह मानते थे कि युद्ध में ब्रिटेन को सहयोग देने के परिणामस्वरूप अंग्रेजों द्वारा भारतीय निवासियों के प्रति उदारता बरती जाएगी और उन्हें अधिक संवैधानिक अधिकार प्राप्त होंगे।
- इस युद्ध के बाद वापस लौटे सैनिकों ने जनता का मनोबल बढ़ाया।
- दरअसल, भारत ने लोकतंत्र की प्राप्ति के वादे के तहत इस विश्व युद्ध में ब्रिटेन का समर्थन किया था लेकिन युद्ध के तुरंत बाद अंग्रेज़ों ने रौलेट एक्ट पारित कर दिया। इसके परिणामस्वरूप भारतीयों में ब्रिटिश हुकूमत के प्रति असंतोष का भाव जागा और उनमें राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ जिसके चलते जल्द ही असहयोग आंदोलन की शुरुआत हुई।
- इस युद्ध के बाद यूएसएसआर के गठन के साथ ही भारत में भी साम्यवाद का प्रसार (सीपीआई के गठन) हुआ और परिणामतः स्वतंत्रता संग्राम पर समाजवादी प्रभाव देखने को मिला।

प्रथम विश्व युद्ध में शामिल होने का कारण

- भारतीय सैनिकों ने युद्ध के मैदान में बहादुरी के साथ लड़कर अपने कबीले या जाति को सम्मान दिलाने के कार्य को अपने कर्तव्य के रूप में देखा।
- एक भारतीय पैदल सैनिक का मासिक वेतन उस समय महज़ 11 रुपए था, लेकिन युद्ध में भाग लेने से अर्जित अतिरिक्त आय किसान परिवार के लिये एक अच्छा विकल्प थी, इसलिये युद्ध में शामिल होने का एक उद्देश्य धन की प्राप्ति को माना जा सकता है।
- अक्सर विभिन्न पत्रों में उल्लेख मिलता है कि भारतीय सैनिकों ने सम्राट जॉर्ज पंचम के प्रति व्यक्तिगत कर्त्तव्य की भावना से प्रेरित होकर इस युद्ध में हिस्सा लिया था।

- गौरतलब है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और देश का सामाजिक-आर्थिक विकास एक-दूसरे से अलग नहीं है बल्कि यह सह-संबंधित है। प्रथम विश्व युद्ध ने भारत को वैश्विक घटनाओं और इसके विभिन्न प्रभावों से जोड़ने का कार्य किया। **इसके विभिन्न प्रभाव निम्नानुसार हैं -**

1. **राजनीतिक प्रभाव**

- युद्ध की समाप्ति के बाद भारत में पंजाबी सैनिकों की वापसी ने उस प्रांत में औपनिवेशिक शासन के खिलाफ राजनीतिक गतिविधियों को भी उत्तेजित किया जिसने आगे चलकर व्यापक विरोध प्रदर्शनों का रूप ले लिया। उल्लेखनीय है कि युद्ध के बाद पंजाब में राष्ट्रवाद का बड़े पैमाने पर प्रसार हेतु सैनिकों का एक बड़ा भाग सक्रिय हो गया।
- जब 1919 का मोंटग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार 'गृह शासन की अपेक्षाओं को पूरा करने में असफल रहा तो भारत में राष्ट्रवाद और सामूहिक नागरिक अवज्ञा का उदय हुआ।
- युद्ध हेतु सैनिकों की ज़बरन भर्ती से उत्पन्न आक्रोश ने राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने की पृष्ठभूमि तैयार की।

2. **सामाजिक प्रभाव**

- युद्ध के तमाम नकारात्मक प्रभावों के वाबजूद वर्ष 1911 और 1921 के बीच भर्ती हुए सैनिक समुदायों की साक्षरता दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। युद्ध के मैदान में पुरुषों की उपयोगिता की धारणा का उन दिनों महत्त्व होने के कारण सैनिकों ने अपने विदेशी अभियानों हेतु पढ़ना-लिखना सीखा।
- युद्ध में भाग लेने वाले विशेष समुदायों का सम्मान समाज में बढ़ गया।
- इसके अतिरिक्त गैर-लड़ाकों की भी बड़ी संख्या में भारत से भर्ती की गई, जैसे कि नर्स, डॉक्टर इत्यादि। अतः इस युद्ध के दौरान महिलाओं के कार्य-क्षेत्र का भी विस्तार हुआ और उन्हें सामाजिक महत्त्व भी प्राप्त हुआ।
- हालाँकि भारतीय समाज को ऐसी परिस्थितियों में आवश्यक सेवाओं से वंचित कर दिया गया जहाँ पहले से ही एस प्रकार की सेवाओं/कौशल (नर्स, डॉक्टर) का अभाव था।

3. **आर्थिक प्रभाव**

- ब्रिटेन में भारतीय सामानों की मांग में तेज़ी से वृद्धि हुई क्योंकि ब्रिटेन में उत्पादन क्षमता पर युद्ध के कारण बुरा प्रभाव पड़ा था।
- हालाँकि युद्ध के कारण शिपिंग लेन में व्यवधान उत्पन्न हुआ लेकिन इसका यह अर्थ था कि भारतीय उद्योगों को ब्रिटेन और जर्मनी से पूर्व में आयात किये गए इनपुट की कमी की वजह से असुविधा का सामना करना पड़ा था। अतः अतिरिक्त मांग के साथ-साथ आपूर्ति की बाधाएँ भी मौजूद थीं।
- युद्ध का एक और परिणाम मुद्रास्फीति के रूप में सामने आया। वर्ष 1914 के बाद छह वर्षों में औद्योगिक कीमतें लगभग दोगुनी हो गईं और तेज़ी से बढ़ती कीमतों ने भारतीय उद्योगों को लाभ पहुँचाया।
- कृषि उत्पादों की कीमत औद्योगिक कीमतों की तुलना में धीमी गति से बढ़ी। अगले कुछ दशकों में विशेष रूप से महामंदी (Great Depression) के दौरान वैश्विक वस्तुओं की कीमतों में गिरावट की प्रवृत्ति जारी रही।
- खाद्य आपूर्ति, विशेष रूप से अनाज की मांग में वृद्धि से खाद्य मुद्रास्फीति में भी भारी वृद्धि हुई। यूरोपीय बाज़ार को नुकसान के कारण जूट जैसे नकदी फसलों के निर्यात को भी भारी नुकसान पहुँचा।
- उल्लेखनीय है कि इस बीच सैनिकों की मांग में वृद्धि के चलते भारत में जूट उत्पादन में संलग्न मज़दूरों की संख्या में कमी हुई और बंगाल के जूट मिलों के उत्पादन को भी हानि पहुँची जिसके लिये मुआवज़ा दिया गया परिणामतः आय असमानता में वृद्धि हुई।

- वहीं, कपास जैसे घरेलू विनिर्माण क्षेत्रों में ब्रिटिश उत्पादों में आई गिरावट से लाभ भी हुआ जो कि युद्ध पूर्व बाज़ार पर हावी था।
- ब्रिटेन में ब्रिटिश निवेश को पुनः शुरू किया गया, जिससे भारतीय पूंजी के लिये अवसर सृजित हुए।

हालाँकि यह "सभी युद्धों को समाप्त करने के लिये एक युद्ध" के विचार के विपरीत निकला। वर्सेटाइल की संधि के माध्यम से जर्मनी की आर्थिक बर्बादी और राजनीतिक अपमान को सुनिश्चित किया गया जो कि द्वितीय विश्व युद्ध के रूप में परिणत हुआ।

द्वितीय विश्व युद्ध

- **द्वितीय विश्व युद्ध वर्ष 1939-45 के बीच होने वाला एक सशस्त्र विश्वव्यापी संघर्ष था।**
- **इस युद्ध में दो प्रमुख प्रतिद्वंद्वी गुट धुरी[Axis] शक्तियाँ (जर्मनी, इटली और जापान) तथा मित्र[Allies] राष्ट्र (फ्राँस, ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ और कुछ हद तक चीन) शामिल थे।**
- **यह इतिहास का सबसे बड़ा संघर्ष था जो लगभग छह साल तक चला था।**
- **इसमें लगभग 100 मिलियन लोग शामिल हुए थे और 50 मिलियन लोग (दुनिया की आबादी का लगभग 3%) मारे गए थे।**

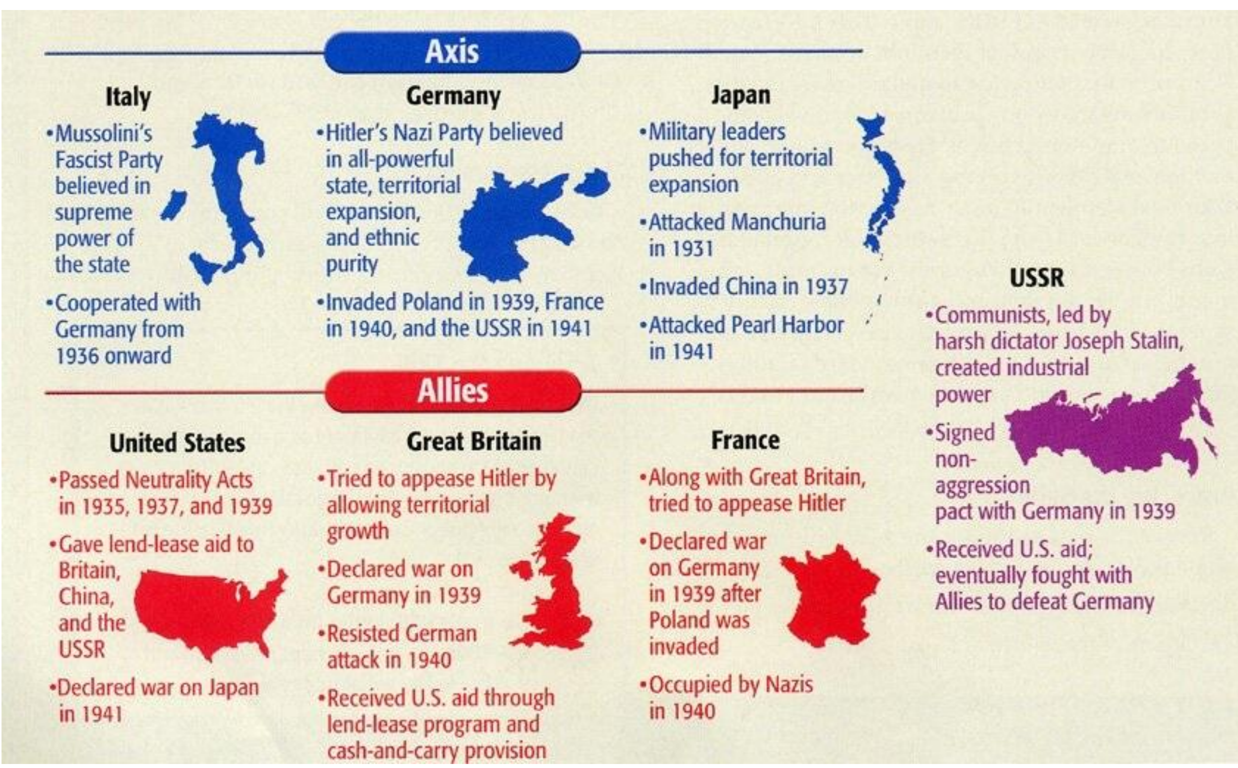

युद्ध के कारण

द्वितीय विश्व युद्ध के कई प्रमुख कारण थे।

1) वर्साय की संधि

- प्रथम विश्व युद्ध के बाद विजयी मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी के भविष्य का फैसला किया। जर्मनी को वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर करने के लिये मज़बूर किया गया था।
- इस संधि के तहत जर्मनी को युद्ध का दोषी मानकर उस पर आर्थिक दंड लगाया गया, उसके प्रमुख खनिज और औपनिवेशिक क्षेत्र को ले लिये गया तथा उसे सीमित सेना रखने के लिये प्रतिबद्ध किया गया।
- इस अपमानजनक संधि ने जर्मनी में अति-राष्ट्रवाद के प्रसार का मार्ग प्रशस्त किया।

2) राष्ट्र संघ की विफलता

- राष्ट्र संघ की स्थापना वर्ष 1919 में एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन के रूप में विश्व शांति को बनाए रखने के लिये की गई थी।
- यह संगठन विश्व के सभी देशों को अपना सदस्य बनाना चाहता था ताकि उनके बीच विवाद होने पर उसे बल के बजाय बातचीत द्वारा सुलझाया जा सके।
- राष्ट्र संघ का विचार अच्छा था, लेकिन यह सफल नहीं हुआ क्योंकि सभी देश इसमें शामिल नहीं हो सके।
- इसके अलावा संघ के पास इटली के इथियोपिया पर या जापान के मंचूरिया क्षेत्र पर आक्रमण जैसे सैन्य आक्रमणों को रोकने के लिये अपनी सेना नहीं थी।

3) वर्ष 1929 की महामंदी

- वर्ष 1930 के दशक की विश्वव्यापी आर्थिक मंदी ने यूरोप और एशिया में अलग-अलग तरीकों से अपना प्रभाव डाला।
- यूरोप की अधिकांश राजनीतिक शक्तियाँ जैसे- जर्मनी, इटली, स्पेन आदि अधिनायकवादी और साम्राज्यवादी सरकारों में स्थानांतरित हो गईं।
- एशिया का संसाधन संपन्न देश जापान, एशिया और प्रशांत क्षेत्रों पर अपना नियंत्रण स्थापित करने के लिये इन क्षेत्रों पर आक्रमण करने लगा।

4) फासीवाद का उदय

- प्रथम विश्व युद्ध के विजेताओं का उद्देश्य "दुनिया को लोकतंत्र के लिये सुरक्षित करना" था। युद्ध के बाद जर्मनी ने अन्य अधिकांश देशों की तरह लोकतांत्रिक संविधान को अपनाया।
- इटली में सन् 1920 के दशक में राष्ट्रवादी, सैन्यवादी अधिनायकवाद की लहर को फासीवाद के नाम से जाना जाता है।
- इस विचारधारा ने स्वयं को लोकतंत्र से अधिक प्रभावी ढंग से काम करने वाली और साम्यवाद को रोकने वाली के रूप में प्रस्तुत किया।

- **बेनिटो मुसोलिनी द्वारा वर्ष 1922 में इटली में इंटरवार (Interwar) अवधि के दौरान पहली फासीवादी तानाशाही सरकार की स्थापना की गई।**

5) नाज़ीवाद का उदय

- **जर्मन नेशनल सोशलिस्ट (नाज़ी) पार्टी के नेता एडोल्फ हिटलर ने फासीवाद की नस्लवादी विचारधारा का प्रचार किया।**
- **हिटलर ने वर्साय की संधि को पलट देने, जर्मनी की संवृद्धि धन और वैभव को पुनः बहाल करने और जर्मन लोगों के लिये अतिरिक्त लेबेन्सराम (Lebensraum- रहने की जगह) को सुरक्षित करने का वादा किया।**
- **हिटलर वर्ष 1933 में जर्मन चांसलर बना और उसने आगे चलकर खुद को एक तानाशाह के रूप में स्थापित कर लिया।**
- **नाज़ी शासन ने वर्ष 1941 में स्लाव, यहूदियों और हिटलर की विचारधारा के दृष्टिकोण से हीन समझे जाने वाले अन्य तत्त्वों के खिलाफ युद्ध शुरू कर दिया।**

6) तुष्टिकरण की नीति

- **हिटलर ने खुले तौर पर वर्साय की संधि का उल्लंघन किया और जर्मनी की सेना तथा हथियारों का गुप्त रूप से निर्माण शुरू कर दिया।**
- **हिटलर की गतिविधियों के बारे में ब्रिटेन और फ्राँस को पता था, लेकिन उन्हें लगा कि एक मज़बूत जर्मनी ही रूस के साम्यवाद के प्रसार को रोक सकता है।**
- **इस तुष्टिकरण का म्यूनिख समझौता (सितंबर 1938) एक प्रमुख उदाहरण था। इस समझौते में ब्रिटेन और फ्राँस ने जर्मनी को चेकोस्लोवाकिया के उन क्षेत्रों में प्रवेश करने की अनुमति दे दी, जहाँ जर्मन-भाषी लोग रहते थे।**
- **जर्मनी ने वादा किया था कि वह शेष चेकोस्लोवाकिया या किसी अन्य देश पर आक्रमण नहीं करेगा, लेकिन जर्मनी द्वारा मार्च 1939 में इस वादे को तोड़कर शेष चेकोस्लोवाकिया पर आक्रमण कर दिया गया।**
- **इसके बाद भी ब्रिटेन और फ्राँस द्वारा सैन्य कार्रवाई नहीं की गई।**

द्वितीय विश्व युद्ध की प्रमुख घटनाएँ

1. शुरुआत

- **अंतर्राष्ट्रीय तनाव** (स्पेनिश गृह युद्ध, जर्मनी और ऑस्ट्रिया का संघ, हिटलर द्वारा सूडिटेनलैंड पर कब्ज़ा और चेकोस्लोवाकिया पर आक्रमण) **के तीन वर्षों में अत्यधिक बढ़ जाने के कारण धुरी और मित्र शक्तियों के बीच संबंध बिगड़ने लगे।**
- **जर्मनी द्वारा 1 सितंबर, 1939 को पोलैंड पर आक्रमण के दो दिन बाद ब्रिटेन और फ्राँस ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी।**

- इस घटना ने द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत कर दी।

2. **वाक् युद्ध**
   - पश्चिमी यूरोप युद्ध के पहले कुछ महीनों के दौरान बहुत शांत था।
   - युद्ध की इस अवधि को 'वाक् युद्ध' (Phoney War) के रूप में जाना जाता है।
   - इस दौरान युद्ध की तैयारी जारी रही, लेकिन वास्तविक सैन्य संघर्ष बहुत कम हुआ। पश्चिमी यूरोपीय देशों के नागरिकों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया गया।

3. **रिबेंट्रोप की संधि**
   - जर्मन तानाशाह एडोल्फ हिटलर ने वर्ष 1939 के शुरुआती दौर में पोलैंड पर आक्रमण करने का निश्चय कर लिया था।
   - पोलैंड को फ्राँस और ब्रिटेन द्वारा जर्मन आक्रमण के समय सहायता दिये जाने का आश्वासन प्राप्त था। हिटलर का पूरा इरादा पोलैंड पर आक्रमण करने का था, लेकिन इससे पहले वह सोवियत संघ के विरोध को खत्म करना चाहता था।
   - यद्यपि जर्मनी और सोवियत संघ के बीच मास्को में अगस्त 1939 में अनाक्रमण समझौता हो चुका था।

4. **शीतकालीन, 1940**
   - रूस और फिनलैंड के बीच 'शीतकालीन युद्ध' मार्च 1940 में खत्म हुआ था और अगले महीने जर्मनी ने डेनमार्क और नॉर्वे पर आक्रमण कर दिया।
   - डेनमार्क ने तुरंत आत्मसमर्पण कर दिया लेकिन नॉर्वे ने ब्रिटेन और फ्राँस की सहायता से जून 1940 तक जर्मनी का मुकाबला किया।

5. **फ्राँस का पतन, 1940**
   - जर्मनी ने स्कैंडिनेवियाई देशों के साथ युद्ध समाप्त होने के बाद फ्राँस, बेल्जियम और हॉलैंड पर आक्रमण किया।
   - इस चरण के दौरान पश्चिमी यूरोप ने 'तड़ित युद्ध प्रणाली' (Blitz Krieg) का सामना किया।
   - तड़ित युद्ध प्रणाली: जर्मनी की सेना दुश्मनों पर लड़ाकू हवाई जहाज़ों से अतितीव्र गति से हवाई हमले करके उन्हें बर्बाद कर देती थी। इस तरह जर्मन सेना दुश्मनों को मुकाबला करने का मौका ही नहीं देती थी।
   - जर्मनी ने फ्राँस में कठपुतली फ्राँसीसी विची (French Vichy) सरकार के साथ युद्धविराम पर हस्ताक्षर किये।
   - हिटलर ने फ्राँस पर विजय प्राप्त करने के बाद ब्रिटेन पर आक्रमण की तैयारी शुरू कर दी।

6. **ब्रिटेन पर जर्मनी का आक्रमण, 1940**

- ब्रिटेन पर जर्मनी का आक्रमण जुलाई से सितंबर 1940 तक लगातार जारी रहा। यह पूरी तरह से हवा में लड़ी जाने वाली पहली लड़ाई थी।
- जर्मनी ने हवाई मार्ग से प्रमुख कारखानों और शहरों पर हमला करने का फैसला लिया, लेकिन रॉयल एयर फोर्स बड़ी मुश्किल से उन्हें बचाने में सफल रही।
- अंततः जर्मनी ने ब्रिटेन पर आक्रमण की अपने योजनाओं को अनिश्चितकाल के लिये स्थगित कर दिया।

7. युद्ध का वैश्विक स्वरूप

- यूरोप महाद्वीप (ब्रिटेन को छोड़कर) पर नाज़ी नियंत्रण के बाद युद्ध को वैश्विक स्तर पर ले जाया गया।
- मुसोलिनी की सेना की ग्रीस और टोब्रुक (Tobruk) में हार के बाद जर्मन सेना उत्तरी अफ्रीका तक पहुँच गई और ग्रीस तथा उसने अप्रैल 1941 में यूगोस्लाविया पर आक्रमण कर दिया।

8. ऑपरेशन बारबोसा

- हिटलर ने ब्रिटेन में हार का सामना करने के बाद रिबेंट्रोप संधि को रद्द कर वर्ष 1941 में रूस पर आक्रमण कर दिया।
- सेबेस्टोपोल (Sebastopol) को अक्तूबर के अंत तक जीत लेने के बाद अगला कदम मास्को पर साल के अंत तक विजय पाना था।
- रूस के जिस शीत ऋतु का अनुभव नेपोलियन ने एक सदी पहले किया था, वैसा ही अनुभव जर्मनी को करना पड़ा।
- सोवियत संघ ने दिसंबर में पलटवार किया और बसंत ऋतु तक पूर्वी मोर्चा स्थिर रहा।

9. पर्ल हार्बर

- अमेरिकी व्यापार प्रतिबंधों से परेशान जापान ने 7 नवंबर, 1941 को हवाई में स्थित अमेरिकी नौसेना बेस पर्ल हार्बर पर एक अचानक हमला कर दिया।
- इसने यह सुनिश्चित किया कि वैश्विक संघर्ष शुरू हो गया है। इस हमले के कुछ दिनों बाद जर्मनी ने अमेरिका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।
- जापान ने पर्ल हार्बर पर हमला करने के एक सप्ताह के भीतर ही फिलीपींस, बर्मा और हाॅन्गकाॅन्ग पर आक्रमण कर दिया।

10. युद्ध में अमेरिका का प्रवेश

- द्वितीय विश्व युद्ध में अमेरिका ने वर्ष 1942 में प्रवेश किया। अमेरिका के लड़ाकू विमानों ने इस युद्ध में निर्णायक भूमिका निभाते हुए चार जापानी वाहक (Carrier) और एक युद्धपोत को नष्ट कर दिया।
- नाज़ियों द्वारा यहूदी लोगों की सामूहिक हत्या की खबरें मित्र राष्ट्रों तक फैल गई और अमेरिका इन अपराधों का बदला लेने का वादा किया।

11. जर्मनी की पराजय

- वर्ष 1942 के उत्तरार्द्ध में ब्रिटिश सेनाओं ने उत्तरी अफ्रीका और स्टालिनग्राद पर जवाबी कार्रवाई की।
- जर्मनी ने फरवरी 1943 में स्टालिनग्राद में सोवियत संघ के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। जर्मन सेना की यह पहली बड़ी हार थी।
- इसके अलावा उत्तरी अफ्रीका में जर्मन और इतालवी सेनाओं ने मित्र राष्ट्रों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।
- रूसी सेना को पूर्वी मोर्चे पर बढ़त मिलने लगी, इसने जर्मनी से खार्किव (Kharkiv) और कीव (Kiev) को वापस ले लिया। इसके अलावा मित्र देशों के बमवर्षकों ने जर्मन शहरों पर हमला करना शुरू कर दिया।
- रूसी सेना 21 अप्रैल, 1945 को बर्लिन (जर्मनी की राजधानी) तक पहुँच गई।
- हिटलर ने 30 तारीख को खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली और मुसोलिनी को इटली के देशभक्तों द्वारा पकड़कर फाँसी दे दी गई।
- जर्मनी ने 7 मई को बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया और अगले दिन यूरोप में विजय दिवस के रूप में मनाया गया। इस प्रकार यूरोप में युद्ध समाप्त हो गया।

12. परमाणु हमला और युद्ध की समाप्ति

- जापान, मित्र देशों पर आक्रमण के लिये योजनाएँ तैयार कर रहा था। अतः बड़े पैमाने पर लड़ाई और जनहानि की आशंका ने नए अमेरिकी राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन को जापान के खिलाफ परमाणु बम के उपयोग की मंज़ूरी देने के लिये प्रेरित किया।
- परमाणु और इसी प्रकार के अन्य विनाशकारी बमों का विकास वर्ष 1942 से ही किया जा रहा था, जिसमें से एक को 6 अगस्त, 1945 को जापान के शहर हिरोशिमा पर गिराया गया।
- तीन दिन बाद एक और बम नागासाकी पर गिरा दिया गया।
- कोई भी देश इस तरह के हमलों का सामना नहीं कर सकता था। अतः जापान ने 14 अगस्त को आत्मसमर्पण कर दिया।
- जापान के आत्मसमर्पण के साथ ही द्वितीय विश्व युद्ध का अंत हो गया।

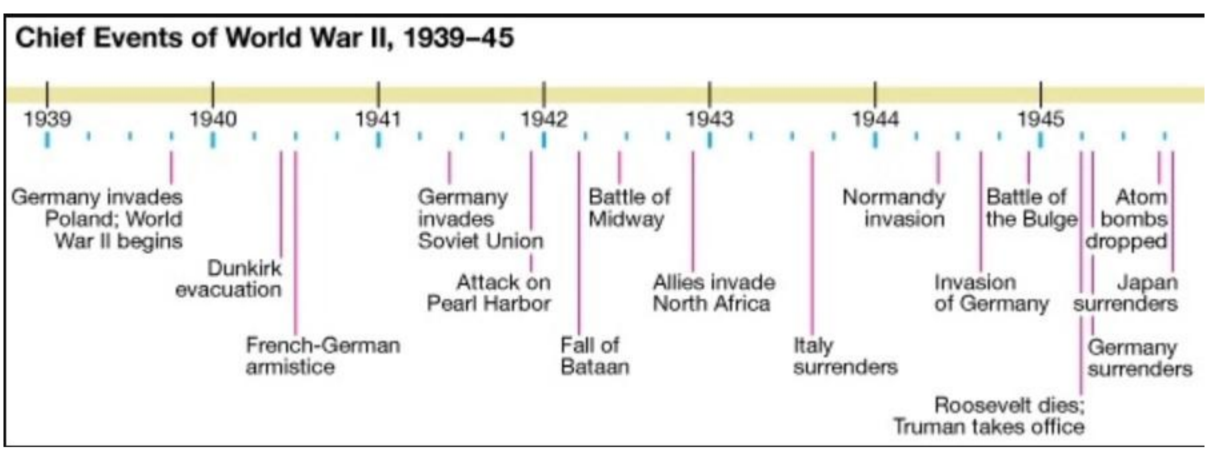

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद

A. नई महाशक्तियों का उद्भव

द्वितीय विश्व युद्ध के कारण देशों और महाद्वीपों की स्थिति में बदलाव आया। महाशक्तियों के रूप में ब्रिटेन और फ्राँस ने अपनी स्थिति को खो दिया तथा अब संयुक्त राज्य अमेरिका एवं यूएसएसआर ने इनकी जगह ले ली।

B. विउपनिवेशीकरण की शुरुआत

युद्ध के बाद ब्रिटेन और फ्राँस विभिन्न घरेलू और बाहरी समस्याओं से जूझने लगे। इन दोनों देशों का अपने उपनिवेशों पर से नियंत्रण खत्म होने लगा। इस प्रकार युद्ध के बाद अफ्रीका और एशिया में से उपनिवेशवाद का अंत हो गया।

C. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना

- संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध के महत्त्वपूर्ण परिणामों में से एक थी।
- संयुक्त राष्ट्र चार्टर मानव जाति की आशाओं और आदर्शों को सुनिश्चित करता है जिसके आधार पर देश स्थायी शांति बनाए रखने के लिये मिलकर काम कर सकते हैं।
- हालाँकि द्वितीय विश्व युद्ध के अंत से बहुत पहले अटलांटिक चार्टर के तहत संयुक्त राष्ट्र की स्थापना पर सहमति बन चुकी थी।

D. शीत युद्ध की शुरुआत

- युद्ध की समाप्ति के बाद शांति संधि स्थापित करने के लिये जर्मनी के पॉट्सडैम (Potsdam) में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। हिटलर के साथ युद्ध में शामिल देशों को हार का सामना करना पड़ा। जर्मनी और उसकी राजधानी बर्लिन को चार भागों में विभाजित कर दिया गया।
- इन चारों भागों को ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्राँस और सोवियत संघ द्वारा नियंत्रित किया जाना था।
- तीन पश्चिमी सहयोगियों और सोवियत संघ के मध्य कई चीज़ों पर असहमति थी। परिणामस्वरूप जर्मनी दो भागों (पूर्वी जर्मनी, एक कम्युनिस्ट सरकार और पश्चिम जर्मनी, एक लोकतांत्रिक राज्य) में विभाजित हो गया।
- इस विभाजन ने शीत युद्ध की नींव रखी।

E. नई विश्व आर्थिक व्यवस्था

- **ब्रेटन वुड्स सम्मेलन को आधिकारिक तौर पर संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक और वित्तीय सम्मेलन (United Nations Monetary and Financial Conference) के रूप में जाना जाता है। 1 से 22 जुलाई, 1944 तक 44 देशों के प्रतिनिधि इस सम्मेलन में शामिल हुए थे। इसका तात्कालिक उद्देश्य द्वितीय विश्वयुद्ध और विश्वव्यापी संकट से जूझ रहे देशों की मदद करना था।**
- **द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् युद्ध प्रभावित अर्थव्यवस्थाओं के पुनर्निर्माण एवं विकास के लिये पुनर्निर्माण और विकास के लिये अंतर्राष्ट्रीय बैंक (IBRD- जिसे अब विश्व बैंक के रूप में जाना जाता है) का स्थापना की गई।**
- **अमेरिकी डॉलर को विश्व व्यापार के लिये आरक्षित मुद्रा के रूप में स्थापित किया गया।**

भारत और द्वितीय विश्व युद्ध

- **ब्रिटिश साम्राज्य को द्वितीय विश्व युद्ध के कारण भारी नुकसान हुआ था। ब्रिटेन ने इसकी भरपाई के लिये अपने उपनिवेशों की तरफ देखना शुरू किया ताकि उसे विश्व शक्ति का दर्जा वापस मिल सके। इसी समय महात्मा गांधी ने भारतीयों को अंग्रेज़ों के खिलाफ संगठित करने हेतु आंदोलन शुरू कर दिया।**
- **द्वितीय विश्व युद्ध का उद्देश्य हिटलर के तानाशाही और ब्रिटेन के उपनिवेशिक अधिपत्य को खत्म करना था।**
- **उपनिवेशों की जनता ने युद्ध के बाद अपनी आज़ादी के लिये आंदोलन शुरू कर दिया।**
- **ब्रिटेन में वर्ष 1945 में जब लेबर पार्टी सत्ता में आई तो इसका झुकाव उदारवादी सिद्धांतों और नस्लीय समानता की ओर था।**
- **सत्ता में आने के तुरंत बाद प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली (लेबर पार्टी) ने भारत को स्वतंत्रता देने की प्रक्रिया शुरू कर दी।**

MPPSC 2022
ASSISTANT REGISTRAR
ONLINE TEST SERIES

VS EDUCATION

VS Education के मार्गदर्शन में शैलेन्द्र यादव सर, सुयश कमल सोनी सर एवं टीम द्वारा निर्मित टेस्ट सीरीज

	PART-A	
11	UNIT-I, II, & III: MPGS	UPLOADED
12	UNIT-IV & V: National-International & MP Current Affairs, Information and Communication Technology.	UPLOADED
13	FULL LENGTH TEST	30-10-2022
14	FULL LENGTH TEST	01-11-2022
15	FULL LENGTH TEST	05-11-2022
16	FULL LENGTH TEST	08-11-2022
17	FULL LENGTH TEST	11-11-2022
18	FULL LENGTH TEST	14-11-2022
19	FULL LENGTH TEST	17-11-2022
20	FULL LENGTH TEST	20-11-2022

Attention !!

1. ऑनलाइन टेस्ट सीरीज के लिए न्यूनतम व्यवस्था शुल्क रखा गया है। (टाइपिंग, पोर्टल, अपलोडिंग आदि)
2. यदि Exam Date दिए गए टाइम टेबल के बीच में घोषित हो जाती है तो टेस्ट पेपर Exam Date से एक सप्ताह पहले अपलोड कर दिए जायेंगे।

- 12 Unit Wise Test
- 8 Full Length Test

भाषा : हिंदी & अंग्रेजी

Chat with us on WhatsApp

9981770371